एकादशी माहात्म्य

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

कादशी माहत्म्य

व्रत कथा (भाषा)

जिसमें

एक वर्ष की चौबीसों एकादशी और
अधिक (लौंद) मास की दोनों
एकादशी-महात्म्य के अतिरिक्त
चातुर्मास्य व्रत, पंच रात्रि व्रत
आरती तथा उद्यापन विधि सहित।

संकलनकर्ता :
पं. मनोहर लाल (वशिष्ठ)

मूल्य : पच्चीस रुपये

लक्ष्मी प्रकाशन
4734, बल्लीमारान, दिल्ली-110006
दूरभाष : 23917707

हर महीने की एकादशियों के नाम इस प्रकार हैं-

❀ अथ ❀

॥ एकादशी व्रत माहात्म्य-कथा भाषा ॥

श्रीसूत जी महाराज शौनक आदि अट्ठासी हजार ऋषियों से बोले-हे महर्षियो! एक वर्ष के अन्दर बारह महीने होते हैं और एक महीने में दो एकादशी होती हैं। सो एक वर्ष में चौबीस एकादशी होती हैं। जिस वर्ष लौंद (अधिक) पड़ता है उस वर्ष दो एकादशी बढ़ जाती हैं। इस तरह कुल छब्बीस एकादशी होती हैं।

१. उत्पन्ना, २. मोक्षदा, (मोक्ष प्रदान करने वाली), ३. सफला (सफलता देने वाली), ४. पुत्रदा (पुत्र को देने वाली), ५. षट्तिला, ६. जया, ७. विजया, ८. आमलकी, ९. पाप मोचनी (पापों को नष्ट करने वाली), १०. कामदा, ११. बरूथनी, १२. मोहिनी, १३. अपरा, १४. निर्जला, १५. योगिनी, १६. देवशयनी, १७. कामिदा, १८. पुत्रदा, १९. अजा, २०. परिवर्तिनी, २१. इन्द्रा, २२. पाशांकुशा, २३. रमा, २४. देवोत्यानी। लौंद (अधिक) की दोनों

एकादशियों का नाम क्रमानुसार पद्मिनी और परमा है। ये सब एकादशी यथा नाम तथा गुण वाली हैं। इन एकादशियों के नाम तथा गुण उनके व्रत की कथा सुनने से मालूम होंगे। जो मनुष्य इन एकादशियों के व्रत को शास्त्रानुसार करते हैं उन्हें उसी के फल की प्राप्ति होती है।

नैमिषारण्य क्षेत्र में श्रीसूतजी ब्राह्मणों से बोले-हे ब्राह्मणो! विधि सहित इस एकादशी महात्म्य को भगवान श्रीकृष्ण ने कहा था। प्रेमीजन ही इस व्रत की उत्पत्ति को प्रेम पूर्वक सुनते हैं और इस लोक में अनेकों सुखों को भोगकर अन्त में विष्णु पद को प्राप्त करते हैं। श्री सूतजी बोले-हे ब्राह्मणों सबसे प्रथम इस एकादशी माहात्म्य को भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा था, उसी के अनुसार मैं आपसे कहता हूं। अर्जुन ने कहा-हे जनार्दन! इस एकादशी व्रत का माहात्म्य क्या है इस व्रत के करने से क्या पुण्य मिलता है और इसकी विधि क्या है? सो आप मुझसे कहिये। ऐसा सुनकर श्रीभगवान ने कहा-हे अर्जुन! सबसे पहले हेमन्त ऋतु के मार्गशीर्ष महीने

में कृष्ण पक्ष की एकादशी का व्रत करना चाहिए। दशमी की शाम को दातुन करना चाहिये और रात को भोजन नहीं करना चाहिये। एकादशी को सुबह संकल्प नियम के अनुसार कार्य करना चाहिये। दोपहर में संकल्प पूर्वक नदी, सरोवर, बाबड़ी, कुंआ आदि में से किसी में स्नान करना चाहिये। स्नान करने के पहले शरीर पर मिट्टी का चन्दन लगाना चाहिए। चंदन लगाने का मंत्र इस प्रकार है-

अश्व क्रान्ते रथ क्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे,
उधृतापि बराहेण कृष्णे न सतबाहुना।
मृत्ति के हर में पापं यन्मया पूर्व संचितम,
त्वयाहतेन पापेन गच्छामि परमागतिम्॥

व्रत करने वाले को स्नान करने के पश्चात् पापी, चोर, पाखंडी, दूसरे की बुराई करने वाला, पर स्त्री गमन करने वाला दुराचारी, दूसरे के धन को चुराने वाला, मंदिरों में चोरी करने वाला इन सब मनुष्यों से बात नहीं करनी चाहिए। यदि अनजाने में इनसे बात हो जय तो इस पाप को दूर करने के लिए सूर्यनारायण के दर्शन करने चाहिए। स्नान के बाद

धूप दीप नैवेद्य से भगवान का पूजन करना चाहिये। रात को दीप दान करना चाहिए। ये सत्कर्म भक्ति पूर्वक करने चाहिए। उस रात को नींद और स्त्री प्रसंग को त्याग देना चाहिए। एकादशी के दिन तथा रात्रि को भजन सत्संग आदि कर्मों में व्यतीत करनी चाहिए। उस दिन श्रद्धा पूर्वक ब्राह्मणों को दक्षिणा देनी चाहिए और उनसे अपनी गलतियों की क्षमा मांगनी चाहिए। धार्मिकजनों को शुक्ल और कृष्णपक्ष की दोनों एकादशियों को एकसा समझना चाहिए उनमें भेद मानना उचित नहीं है। ऊपर लिखी विधि के अनुसार जो मनुष्य एकादशी का व्रत करते हैं उनको शंखोद्धार तीर्थ में स्नान एवं दर्शन करने से जो पुण्य मिलता है। वह एकादशी व्रत के पुण्य के सोलहवें भाग के बराबर भी नहीं है। व्यतीत योग में संक्राँति में तथा चन्द्र सूर्यग्रहण में दान देने से और कुरुक्षेत्र में स्नान करने से जो पुण्य प्राप्त होता है वही पुण्य मनुष्य को एकादशी का व्रत करने से मिलता है। अश्वमेघ यज्ञ करने से जो पुण्य प्राप्त होता है उससे सौगुना पुण्य एकादशी को उपवास करने

से मिलता है। एक हजार तपस्वियों को साठ वर्ष तक भोजन कराने से जो फल मिलता है वह फल इस एकादशी का व्रत करने से प्राप्त होता है। जो पुण्य वेद पाठी ब्राह्मण को एक हजार गौदान करने से मिलता है उससे दस गुना अधिक पुण्य एकादशी का व्रत करने से मिलता है। दस श्रेष्ठ ब्राह्मणों को भोजन कराने से जो पुण्य मिलता है वह एकादशी के पुण्य के दसवें भाग के बराबर होता है।

दस उत्तम ब्राह्मणों को भोजन कराने में जो पुण्य मिलता है उतना ही पुण्य एक ब्रह्मचारी को भोजन कराने से होता है इस पुण्य से हजार गुना पुण्य कन्या और भूमिदान करने से प्राप्त होता है। कन्या और भूमिदान के पुण्य से दसगुना पुण्य (विद्या दान से) दस गुणा पुण्य भूखे को भोजन देने से होता है। अन्नदान के बराबर संसार में कोई दूसरा पुण्य नहीं है। इस दान से स्वर्गीय पितृ तृप्त हो जाते हैं। इस दान का मांहात्म्य देवता भी वर्णन नहीं कर सकते हैं। निर्जल व्रत करने का आधा फल एक बार भोजन करने के बराबर होता है। उपरोक्त कोई सा एक व्रत

जरूर करना चाहिये। एकादशी का व्रत करने पर ही यज्ञ दान तप आदि मिलते हैं अन्यथा नहीं। अतः एकादशी का व्रत अवश्य ही करना चाहिये। इस व्रत में शंख से जल नहीं पीना चाहिये। मछली, सूअर तथा अन्न एकादशी के व्रत में वर्जित है। एकादशी व्रत का फल हजार यज्ञों से भी अधिक है। ऐसा सुनकर अर्जुन ने कहा हे भगवन! आपने इस एकादशी के पुण्य को अनेक तीर्थों के पुण्य से श्रेष्ठ तथा पवित्र क्यों बतलाया, है सो सब कहिए। भगवान बोले हे अर्जुन! सत्युग में एक महाभयंकर मुर नाम दैत्य का था। उस मुर दैत्य से सभी देवता अत्यन्त भयभीत रहते थे। दैत्य ने इन्द्र आदि देवताओं को जीत उन्हें उनके स्थान से गिरा दिया। तब देवेन्द्र ने महेन्द्र से प्रार्थना की हे शिवशंकर हम सब लोग इस समय मुर दैत्य के अत्याचारों से मृत्युलोक में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कृपाकर इस दुःख से छूटने का उपाय बताइए। महादेवजी बोले हे देवेन्द्र आप श्रीविष्णु भगवान के पास जाइए। इन्द्र तथा अन्य देवता क्षीर सागर जहाँ पर कि भगवान विष्णु

शेष शय्या पर शयन कर रहे थे गये और देवताओं सहित इन्द्र ने उनकी इस प्रकार स्तुति की। हे देवताओं के देवता और देवताओं के देवताओं द्वारा स्तुति करने योग्य आपको बारम्बार प्रणाम है। हे दैत्यों के संहारक! हे मधुसूदन! आप हमारी रक्षा करें। हे जगन्नाथ! समस्त देव दैत्यों से भयभीत होकर आपकी शरण में आये हैं। आप ही इस संसार के कारक और कर्ता हैं सब के माता पिता हैं जगत की उत्पत्ति, पालन और संहार कर्ता तथा देवताओं की सहायता करने वाले और शान्ति प्रदान करने वाले हैं। आकाश पाताल आप ही हैं। तीनों लोकों को उत्पन्न करनेवाले ब्रह्मा, सूर्य, चन्द्र, अग्नि, हव्य स्मरण, मन्त्र, यजमान, यज्ञ, कर्म, कर्ता, भोक्ता आदि आप ही हैं। हे देव! शरण में आए हुए की आप ही रक्षा करने वाले हैं। इस समय दैत्यों ने हमें स्वर्ग से निकाल दिया है। अब आप हमारी रक्षा कीजिए! देवताओं द्वारा करुण वाणी को सुनकर श्रीविष्णु भगवान बोले-हे देवताओं! वह कौन सा दैत्य है जिसने देवताओं को जीत लिया है। कहाँ

रहता है तथा उसमें कैसा बल है। यह सब मुझसे काहो। भगवान के वचनों को सुनकर इन्द्र बोला-हे भगवान! प्राचीन समय में नाड़ी जंग नाम का एक दैत्य था। उस दैत्य की ब्रह्म वंश से उत्पत्ति हुई थी। उसी दैत्य के लड़के का नाम मुर है। वह अपनी राजधानी चन्द्रावती में जिसने अपने बल से समस्त विश्व को जीत और सब देवताओं को देवलोक से निकालकर इन्द्र, अग्नि, यम, वरुण, चन्द्रमा, सूर्य बनकर पृथ्वी को तपाता है मेघ बनकर जल की वर्षा करता है अतः आप उस दैत्य को मार कर देवताओं की जीत कराओ।

इन्द्र के वचन सुनकर श्रीविष्णु भगवान बोले-हे देवताओं! मैं तुम्हारे शत्रुओं का शीघ्र ही संहार करूंगा। अब सब चन्द्रावती नगरी को जाइये। इस प्रकार भगवान विष्णु देवताओं से कहकर उनके पीछे पीछे चन्द्रावती नगरी को चल दिये। उस समय मुर अनेक दैत्यों के साथ युद्ध भूमि में गरज रहा था। युद्ध होने पर असंख्य दानव अनेकों अस्त्र-शस्त्रों को धारण कर देवताओं से युद्ध करने लगे परन्तु

देवता दानवों के आगे एक क्षण भी न ठहर सके। तब भगवान भी युद्धभूमि में आ गये। भगवान विष्णु को देखा तो उन पर अस्त्र शस्त्रों का प्रहार करने लगे। भगवान भी चक्र और गदा से उनके शस्त्रों को नष्ट करने लगे। इस युद्ध में अनेकों दानव सदैव के लिए सो गये परन्तु दैत्यों का राजा मुर भगवान के साथ निश्चल भाव से युद्ध करता रहा। भगवान विष्णु मुर को मारने के लिए जिन-२ शस्त्रों का प्रयोग करते वे सब उसके तेज से नष्ट होकर उस पर पुष्पों के समान गिरने लगे। वह आपस में मल्लयुद्ध करने लगे परन्तु उस दैत्य को न जीत सके। अंत में भगवान विष्णु शांत होकर विश्राम करने की इच्छा से बद्रिकाश्रम गए। उस समय अड़तालीस कोस लम्बी एक द्वारवाली हेमवती नाम की गुफा में शयन करने के लिए भगवान घुसे।

हे अर्जुन! अतः मैंने उस गुफा में शयन किया। वह दैत्य भी वहाँ आया। मुझको शयन करता देख मारने को तैयार हो गया। उसी समय मेरी देह से एक अत्यन्त सुन्दर कन्या दिव्य अस्त्र धारण करके

उत्पन्न हुई और दैत्य के सामने आकर युद्ध करने लगी। वह दैत्य इस कन्या से लगातार युद्ध करता रहा। कुछ समय बीतने पर इस कन्या ने क्रोध में आकर उस दैत्य के अस्त्र शस्त्रों के टुकड़े-२ कर दिए, रथ तोड़ दिया। तब वह दैत्य महान क्रोध करके उससे मल्ल युद्ध करने लगा। उस कन्या ने उसको धक्का मारकर मूर्छित कर दिया। जब वह दैत्य मूर्छा से जगा तो उस कन्या ने उसका सिर काट यमपुर पहुंचा दिया। अन्य समस्त दानव भी ऐसा देखकर पाताल लोक को गये। जब भगवान विष्णु की निद्रा टूटी तो उस दैत्य को मरा देखकर अत्यंत आश्चर्य करने लगे और विचारने लगे इस दैत्य को किसने मारा हैं तब कन्या भगवान से हाथ जोड़कर बोली कि हे भगवान! यह दैत्य आपको मारने को तैयार था तब मैंने आपके शरीर से उत्पन्न होकर इसका वध किया है। इस पर भगवान बोले-हे कन्या! तूने इसको मारा है अत: मैं तेरे ऊपर प्रसन्न हूँ। तूने तीनों लोकों के देवताओं को सुखी किया है इसलिए तू अपनी इच्छानुसार वरदान मांग। कन्या बोली-हे

भगवान! मुझे यह वरदान दीजिये कि जो मेरा व्रत करे उसके समस्त पाप नष्ट हों और अन्त में स्वर्ग को जाये। मेरे व्रत का आधा फल रात्रि को मिले और उससे आधा फल एक समय भोजन करने वाले को मिले। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक मेरे व्रत को करे वह निश्चय ही आपके लोक को प्राप्त करे। कृपया मुझे ऐसा ही वरदान दीजिये। जो मनुष्य मेरे दिन तथा रात्रि को एक बार भोजन करे वे धन धान्य से भरपूर रहे। इस पर भगवान विष्णु उस कन्या से बोले-हे कल्याणि! ऐसा ही होगा। मेरे और तेरे भक्त एक ही होंगे और अंत में संसार प्रसिद्धि को प्राप्त होकर मेरे लोक को प्राप्त करेंगे। हे कन्या! एकादशी को पैदा होने से तेरा नाम भी एकादशी हुआ। जो मनुष्य तेरे इस दिन का व्रत करेंगे उनके समस्त पाप नष्ट हो जायेंगे और अंत में मुक्ति को प्राप्त करेंगे। तू मेरे लिए अब तीज, आठें, नौमी और चौदस से भी अधिक प्रिय है। तेरे व्रत का फल सब तीर्थों के फल से महान होगा यह मेरा कथन सत्य है। ऐसे कहकर भगवान उसी स्थान पर अन्तर्ध्यान हो गय।

एकादशी भी भगवान के उत्तम वचनों को सुनकर

अत्यन्त प्रसन्न हुई।

हे अर्जुन! सब तीर्थों, दानों, व्रतों के फल से एकादशी व्रत का फल सर्वश्रेष्ठ है। मैं एकादशी व्रत करने वाले मनुष्यों के शत्रुओं को, विघ्नों को नष्ट कर देता हूँ और उन्हें मोक्ष दिलाता हूँ अर्जुन यह मैंने तुमसे एकादशी की उत्पत्ति के बारे में व्रत लाया है। एकादशी पापों को नष्ट करने वाली और सिद्धि को देने वाली है। उत्तम मनुष्यों को दोनों पक्षों की एकादशियों को समान समझना चाहिए। उनमें भेदभाव मानना उचित नहीं है। जो पुरुष विष्णु भक्त हैं उनको धन्य है। जो मनुष्य एकादशी माहात्म्य को श्रवण व पठन् करते हैं उनको अश्व मेघ यज्ञ का फल मिलता है। जो मनुष्य भक्तिपूर्वक कथा सुनते हैं वे विष्णुलोक को जाते हैं और करोड़ों वर्षों तक उनकी उस जगह पूजा होती है। जो एकादशी माहात्म्य के चौथाई भाग को सुनते हैं उनके ब्रह्महत्या आदि के महान पाप नष्ट हो जाते हैं।

विष्णु धर्म के समान संसार में कोई दूसरा धर्म नहीं है और एकादशी व्रत के बराबर कोई भी दूसरा व्रत नही है।

॥ अथ मोक्षदा एकादशी महात्म्य ॥

श्री युधिष्ठर बोले कि हे भगवान! आप सबको सुख देने वाले हैं और जगत के पति हैं इसलिये मैं आपको नमस्कार करता हूँ। कृपाकर मेरे एक संशय को दूर कीजिये। मार्गशीर्ष माह के शुक्लपक्ष की एकादशी का नाम क्या है उस दिन कौन से देवता की पूजा की जाती है और उसकी विधि क्या है? भगवन मेरे इन प्रश्नों का उत्तर देकर मेरे संदेह को दूर कीजिये। भगवान कृष्णजी बोले हे राजन! आप ने अन्यन्त उत्तम प्रश्न किया है। आप ध्यान पूर्वक सुनिये मार्गशीर्ष माह के शुक्लपक्ष की एकादशी मोक्षदा के नाम से प्रसिद्ध है। इस दिन श्रीदामोदर भगवान की पूजा धूप, दीप, नैवेद्य आदि से भक्ति पूर्वक करनी चाहिये। अब मैं एक पुराणों की कथा कहता हूँ। इस एकादशी के व्रत के प्रभाव से नरक में गये हुए माता पिता पुत्रादि को स्वर्ग की प्राप्ति होती है। आप ध्यानपूर्वक सुनिये।

प्राचीन गोकुल नगर में बैशामख नाम का एक राजा राज्य करता था। इसके राज्य में चारों वेदों के ज्ञाता ब्राह्मण रहते थे। रात्रि को एक दिन स्वप्न में राजा ने अपने पिता को नर्क से पड़े देखा। उसको स्वप्न का बड़ा आश्चर्य हुआ। प्रातःकाल होते ही वह ब्राह्मणो के सामने अपनी सब स्वप्न कथा कहने लगे हे। ब्राह्मणो! रात्रि को स्वप्न में मैंने अपने पिता को नर्क में पड़ा देखा, उन्होंने मुझसे कहा कि हे पुत्र! अब मैं नर्क भोग रहा हूं मेरी यहाँ से मुक्ति करो। अब मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ उस दुःख के कारण मेरा शरीर तप रहा है। आप लोग मुझे किसी प्रकार के तप, दान आदि को बतावें जिससे पिता जी को मुक्ति प्राप्त हो। उस उत्तम पुत्र का जीना व्यर्थ है जो अपने पिता का उद्धार न करे। राजा के ऐसे वचनों को सुन ब्राह्मण बोले-हे राजन! यहाँ से करीब ही वर्तमान, भूत, भविष्य का ज्ञाता पर्वत नाम के एक ऋषि का आश्रम है। आप यह सब बातें उनसे जाकर पूछ लीजिए। वे आपको इसकी विधि बता देंगे।

राजा ऐसा सुनकर मुनि के आश्रम पर गये। उस समय चारों वेदों के ज्ञाता पर्वत मुनि दूसरे ब्रह्मण के समान बैठे थे। राजा ने जाकर उनको साष्टांग प्रणाम किया। पर्वत मुनि ने उससे सांगोपांग कुशल क्षेम पूछी। तब राजा बोले-हे देवर्षि! आपकी कृपा से मेरे राज्य में सब कुशल है परन्तु मेरे मन में अशांति रहती है उसका कुछ उपाय कीजिये। ऐसा सुनकर पर्वत मुनि ने एक मुहुर्त के लिए नेत्र बन्द कर लिये और भूत भविष्य को विचारने लगे। फिर बोले-हे राजन मैंने योग बल के द्वारा तुम्हारे पिता के समस्त कुकर्मों का ज्ञान प्राप्त कर लिया है। उन्होंने पूर्वजन्म में कामातुर होकर सौत के कहने पर एक स्त्री को ऋतुदान माँगने पर भी नहीं दिया। उसी पाप कर्म के फल से तुम्हारे पिता को नर्क में जाना पड़ा है।

तब राजा बोला हे भगवन! मेरे पिता जी के उद्धार हेतु आप कोई उपाय बतलाइये। तब पर्वत मुनि बोले-हे राजन! मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष में

जो एकादशी होती है, उस एकादशी को आप उपवास करें और पुण्य को अपने पिता को संकल्प छोड़ दें। उस एकादशी के पुण्य के प्रभाव से अवश्य ही आपके पिता की मुक्ति होगी। मुनि के वचनों को सुनकर राजा अपने महल को आया और कुटुम्ब सहित मोक्षदा एकादशी का उपवास किया। उस उपवास के पुण्य को राजा ने अपने पिता को संकल्प छोड़ दिया उस पुण्य के प्रभाव से राजा के पिता को मुक्ति मिली और स्वर्ग में जाते हुए अपने पुत्र से बोला हे पुत्र! तेरा कल्याण हो, यह कहकर स्वर्ग को चला गया।

मार्गशीर्ष माह के शुक्लपक्ष की मोक्षदा एकादशी का जो व्रत करते हैं उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में स्वर्गलोक को जाते हैं। इस व्रत से बढ़कर मोक्ष देने वाला दूसरा कोई भी व्रत नहीं है। इस कथा को सुनने व पढ़ने से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है।

॥ अथ सफला एकादशी महात्म्य ॥

श्रीयुधिष्ठिर बोले-हे भगवान! पौष मास के कृष्णपक्ष की एकादशी का क्या नाम है? इस दिन कौन से देवता की पूजा व विधि क्या है? यह सब समझाइये। श्रीकृष्ण भगवान बोले-हे राजन! मैं आपके प्रश्नों का उत्तर देता हूँ। दान देने वाले की अपेक्षा मैं व्रत करने वाले से प्रसन्न हूं।

अब आप इस एकादशी व्रत का माहात्म्य सुनो। पौष माह के कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम सफला है। इस एकादशी के देवता नारायण हैं। इसका पूर्वोक्त विधि अनुसार व्रत करना चाहिए और नारायणजी की पूजा करनी चाहिये। जो मनुष्य एकादशी व्रत तथा मेरा पूजन करते हैं वे धन्य हैं। सफला नाम की एकादशी में मुझे ऋतु के अनुकूल फल अर्पण करे। अर्थात नारियल, नींबू, अनार, सुपारी आदि और धूप, दीप, पुष्प आदि से मेरी सोलह प्रकार से पूजा करे। इस दिन दीपदान तथा रात्रि को जागरण करना चाहिये। इस एकादशी व्रत

के समान यज्ञ, तीर्थ तथा दूसरा कोई भी व्रत नहीं है। मनुष्य को पांच सहस्त्र तपस्या करने से जो पुन्य मिलता है वह पुन्य भक्तिपूर्वक रात्रि जागरण सहित सफला एकादशी के व्रत करने से मिलता है।

हे राजन! अब आप सफल एकादशी की कथा ध्यान पूर्वक सुनिये। चम्पावती नगरी में एक महिष्मान राजा राज्य करता था। उसके चार पुत्र थे। इन पुत्रों में सबसे बड़ा लुमाक राजा का पुत्र महा पापी था। वह सदैव पर स्त्री गमन तथा वैश्याओं के यहाँ अपने पिता का धन नष्ट किया करता था। वह देवता, ब्राह्मण, वैष्णव आदि की निन्दा किया करता था। जब पिता को अपने बड़े पुत्र के बारे में समाचार ज्ञात हुए तब उसको अपने राज्य से निकाल दिया। जब लुम्पक सबके द्वारा त्याग दिया गया तब वह विचारने लगा कि अब मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? अन्त में वह दिन में वन में रहने लगा और रात को अपने पिता की नगरी में चोरी तथा अन्य कुकर्म करने लगा। जिस वन में वह रहता था वह भगवान को अत्यन्त प्रिय था। उस वन में एक बहुत पुराना

पीपल का वृक्ष सब देवताओं का क्रीड़ा स्थल था। इसी वृक्ष के नीचे लुम्पक रहता था। कुछ दिनों के पश्चात् पौष माह के कृष्ण पक्ष की दशमी के दिन वह वस्त्रहीन होने के कारण शीत से मूर्छित हो गया। रात्रि को न सो सका और उसके हाथ पैर अकड़ गये। उसे दिन वह रात्रि बड़ी कठिनता से बीती परन्तु सूर्यनारायण के उदय होने पर भी उसकी मूर्छा न गई।

सफला एकादशी के मध्यान्ह तक वह दुराचारी मूर्छित ही पड़ा रहा। जब सूर्य की गर्मी से उसे होश आया तो वह अपने स्थान से उठकर वन से भोजन की खोज में चल पड़ा। उस दिन वह जीवों को मारने में असमर्थ था इसलिये जमीन पर गिरे हुए फलों को लेकर पीपल के वृक्ष के नीचे आया। जब सूर्य भगवान अस्ताचल को प्रस्थान कर गये तब फलों को पीपल की जड़ के पास रख कहने लगा कि हे भगवान! इन फलों से आप ही तृप्त होवें ऐसा कहकर वह रोने लगा और रात्रि को उसे नींद न आई। इस महापापी के व्रत तथा रात्रि जागरण से

भगवान अत्यन्त प्रसन्न हुए और उसके समस्त पाप नष्ट हो गये। प्रातः ही एक दिव्य घोड़ा अनेकों सुन्दर वस्तुओं से सजा उसके सामने आ खड़ा हो गया। और आकाशवाणी हुई कि हे राजपुत्र! भगवान नारायण के प्रभाव से तेरे समस्त पाप नष्ट हो गये हैं अब तू अपने पिता के पास जाकर राज्य प्राप्त कर। लुम्पक ने जब ऐसी आकाशवाणी सुनी तो वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ और हे भगवान आप की जय हो। ऐसा कहता हुआ सुन्दर वस्त्रों को धारण कर अपने पिता के पास गया। उसने संपूर्ण कथा कह सुनाई और पिता ने अपना राजभार सौंप कर वन का रास्ता लिया।

अब लुम्पक शास्त्रानुसार राज्य करने लगा। उसके स्त्री पुत्र आदि भी परम भक्त बन गये। वृद्धावस्था आने पर वह अपने पुत्र को गद्दी दे भगवान का भजन करने के लिये वन में चला गया और अन्त में विष्णुलोक को गया।

भक्तिपूर्वक जो मनुष्य सफला एकादशी का व्रत करते हैं वे अन्त में मुक्ति पाते हैं। जो मनुष्य

भक्तिपूर्वक सफला एकादशी का व्रत नहीं करते हैं वे पूंछ और सींग से रहित पशु तुल्य हैं। सफला एकादशी के माहात्म्य का पठन व श्रवण से अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है।

॥ अथ पुत्रदा एकादशी माहात्म्य ॥

धर्मराज युधिष्ठिर ने पूछा-हे कृष्ण! अब आप पौष माह के व्रत के बारे में समझाइये। इस दिन कौन से देवता का पूजन होता है तथा क्या विधि है?

इस पर श्रीकृष्ण बोले-हे राजन! पौष शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम पुत्रदा एकादशी है। इसका पूजन विधि से करना चाहिये। इस व्रत में नारायण भगवान की पूजा करनी चाहिये। इसके पुन्य से मनुष्य तपस्वी, विद्वान और लक्ष्मीवान होता है। इसकी मैं एक कथा कहता हूं, सुनो।

भद्रावती नगरी में सुकेतुमान राजा राज्य करता था। वह निपुत था। उसकी स्त्री का नाम शैव्या था। वह सदैव निपुती होने के कारण चिंतित रहती थी।

इस पुत्रहीन राजा के पितर रो-रोकर पिंड लेते थे और सोचा करते थे इसके बाद हमें कौन पिंड देगा। इधर राजा को भी राज्य वैभव से भी संतोष नहीं होता था। इसका एकमात्र कारण पुत्र हीन होना था। वह विचार करता था कि मेरे मरने पर मुझे कौन पिंड देगा। बिना पुत्र के पित्रों और देवताओं से उऋण नहीं हो सकते। जिस घर में पुत्र न हो वहाँ सदैव अंधेरा ही रहता है। इसलिये मुझे पुत्र की उत्पत्ति के लिये प्रयत्न करना चाहिये। पूर्व जन्म के कर्मों से हीं इस जन्म में पुत्र धन आदि मिलते हैं। इस तरह राजा रात दिन इसी चिन्ता में लगा रहता। एक दिन राजा ने अपना शरीर त्याग देने की सोची परन्तु विचार करने लगा कि आत्मघात करना महापाप है। राजा इस तरह मन में विचार कर एक दिन छिप कर वन को चल दिया। राजा घोड़े पर सवार होकर वन में पक्षियों और वृक्षों को देखने लगा। हाथी अपने बच्चों और हथनियों के बीच में घूम रहे हैं। राजा सोच विचार में लग गया।

राजा प्यास के कारण अत्यन्त बेचैन होने लगा और पानी की तलाश में आगे बढ़ा। कुछ ही आगे जाने पर उसे एक सरोवर मिला। उस सरोवर के चारों तरफ मुनियों के आश्रम बने थे। उस समय राजा के दाहिने अंग फड़कने लगे। राजा मन में प्रसन्न होकर सरोवर के किनारे बैठे हुये मुनियों को देखकर घोड़े से उतरा और दण्डवत करके सम्मुख बैठ गया। राजा को देखकर मुनीश्वर बोले-हे राजन! हम तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हैं तुम इस जगह कैसे आए हो सो कहो। इस पर राजा ने उनसे पूछा-हे मुनिश्वरो! आप कौन हैं? और किसलिये यहां हैं सो कहो। मुनि बोले हे राजन! आज पुत्र की इच्छा करने वाले को संतान देने वाली पुत्रदा एकादशी है। हम लोग विश्वदेव हैं और इस सरोवर पर स्नान करने आये हैं। इस पर राजा बोला-हे मुनीश्वर! मेरे भी कोई पुत्र नहीं है यदि आप मुझ पर प्रसन्न हों तो एक पुत्र का वरदान दीजिए। मुनि बोला-हे राजन आज पुत्रदा एकादशी है आप इसका अवश्य ही व्रत करें। भगवान की कृपा से आपके अवश्य ही पुत्र होगा।

मुनि के वचनों के अनुसार राजा ने एकादशी का व्रत किया और द्वादशी को पारायण किया और मुनियों को प्रणाम करके अन्त में अपने महल को वापिस आया। अन्त में रानी ने गर्भ धारण किया और नौ माह के पश्चात उसके एक पुत्र रत्न पैदा हुआ। वह राजकुमार अन्त में अत्यन्त वीर, धनवान, यशस्वी और प्रजा पालक हुआ।

श्रीकृष्ण भगवान बोले-हे राजन! पुत्र प्राप्ति के लिये पुत्रदा एकादशी का व्रत करना चाहिए। जो मनुष्य इसका माहात्म्य श्रवण व पठन करते है उनको स्वर्ग मिलता है।

॥ अथ षटतिला एकादशी महात्म्य ॥

एक समय दालभ्य ऋषि ने पुलस्त्य ऋषि से पूछा हे ब्राह्मण! मनुष्य मृत्युलोक में ब्रह्महत्या आदि महान पाप, दूसरे के धन की चोरी, दूसरे की उन्नति देखकर ईर्ष्या आदि करते हैं परन्तु फिर भी वे नर्क नहीं पाते सो क्या कारण है? वह न जाने कौन सा अल्पदान या अल्प परिश्रम करते हैं। यह सब आप

कृपापूर्वक कहिये। इस पर पुलस्त्य ऋषि बोले हे महाभाग! आपने मुझसे अत्यन्त गम्भीर प्रश्न पूछा है इसको ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि भी नहीं जानते परन्तु मैं आपको यह गुप्त तत्व अवश्य ही बताता हूँ। माघ माह के आने पर मनुष्य को स्नान आदि से शुद्ध रहना चाहिये और इन्द्रियों को वश में करके तथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, अभिमान आदि का त्याग कर भगवान का स्मरण करना चाहिये। हाथ पैर धोकर पुष्य नक्षत्र में गोबर, कपास, तिल मिलाकर कंडे बनाना चाहिये। वह इन कन्डों से १०८ बार हवन करे और यदि इस दिन मूल नक्षत्र और द्वादशी हो तो नियम से रहे। स्नान आदि नित्य क्रिया से शुद्ध होकर भगवान की पूजा कीर्तन करना चाहिये। एकादशी के दिन व्रत और रात्रि को जागरण तथा हवन करना चाहिये। दूसरे दिन धूप, दीप, नैवेद्य से भगवान की पूजा कर खिचड़ी का भोग लगाना चाहिये। इस दिन कृष्ण भगवान का पूजन करना चाहिये। पेठा, नारियल, सीताफल या सुपारी सहित अर्घ्य देना चाहिये और फिर स्तुति करनी चाहिये। हे

भगवान! आप अशरणों को शरण देने वाले हैं। आप संसार में डूबे हुये का उद्धार कीजिये। हे पुण्डरीकाक्ष! हे कमलनेत्र धारी! हे विश्व भगवान! हे जगतगुरु! आप लक्ष्मी जी सहित मेरे इस तुच्छ अर्ध्य को स्वीकार करो। इसके पश्चात ब्राह्मण को जल भरा कुम्भ प्रदान करना चाहिये। ब्राह्मण को श्यामा गाय और तिल पात्र भी देना अच्छा है। तिल, स्नान और भोजन में श्रेष्ठ है अतः मनुष्य को तिलदान भी करना चाहिये। इस प्रकार जो मनुष्य जितने तिल का दान करता है वह उतने ही वर्ष स्वर्ग में निवास करता है।

१. तिल स्नान २. तिल का उबटन ३. तिल का हवन ४. तिलोदक ५. तिल का भोजन ६. तिल का दान।

यह षटतिला एकादशी कहलाती है। इससे अनेक प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं। नारद ऋषि बोले-हे भगवान! आपको नमस्कार है? इस षटतिला एकादशी का क्या पुण्य और क्या कथा है, सो कहिये।

श्रीकृष्ण भगवान बोले-हे नारद! मैं तुमसे आंखों देखी सत्य घटना कहता हूँ। प्राचीन काल में मृत्युलोक की सत्य घटना कहता हूं। प्राचीन काल में मृत्युलोक में एक ब्राह्मणी थी। वह सदैव व्रत किया करती। एक समय वह एक माह व्रत करती रही। इससे उसका शरीर अत्यन्त दुर्बल हो गया था। परन्तु उसने कभी भी देवताओं तथा ब्राह्मणों को धन तथा अन्नदान नहीं किया। इस प्रकार मैंने सोचा कि इस ब्राह्मणी ने व्रत आदि से अपना शरीर शुद्ध कर लिया है और इसको वैष्णव लोक भी मिल जायेगा परन्तु इसने कभी भी अन्नदान नहीं किया है इससे इसकी तृप्ति होना कठिन है। ऐसा सोचकर मैं मृत्युलोक में गया और ब्राह्मणी से अन्न माँगा। वह बोली-आप यहाँ किस लिये आये हैं? मैंने कहा मुझे भिक्षा चाहिये। उसने मुझे एक मृत्पिंड दे दिया। मैं उसे लेकर लौट आया। कुछ समय बीतने पर ब्राह्मणी भी शरीर त्यागकर स्वर्ग आई।

मृत्पिंड के प्रभाव से उसे एक आत्मगृह मिला परन्तु अपने को वस्तुओं से शून्य पाया। वह मेरे पास

आई और बोली-हे भगवान! मैंने अनेकों व्रत आदि से आपकी पूजा की है परन्तु फिर भी मेरा घर वस्तुओं से शून्य है। मैंने कहा-तुम अपने गृह जाओ और देव स्त्रियाँ तुम्हें देखने आयेंगी जब तुम उनसे षटतिला एकादशी का पुण्य और विधि सुनलो तब ही द्वार खोलना।

भगवान के वचन सुनकर वह अपने घर को गई और जब देव-स्त्रियाँ आकर द्वार खुलवाने लगीं तब ब्राह्मणी बोली कि यदि आप मुझे देखने आई हैं तो षटतिला एकादशी का माहात्म्य कहिये। उनमें से एक देव-स्त्री बोली सुनो मैं कहती हूं। जब उसने षटतिला एकादशी का माहात्म्य सुना दिया तब उस ने द्वार खोला। देव-स्त्रियों ने उसको सब स्त्रियों से अलग पाया। ब्राह्मणी ने भी देव स्त्रियों के कहे अनुसार षटतिला का व्रत किया और इसके प्रभाव से उसका गृह धन-धान्य से भरपूर हो गया। अतः मनुष्यों को षटतिला एकादशी का व्रत करना चाहिये। इससे मनुष्यों को जन्म-२ में आरोग्यता प्राप्त होती है और दरिद्रता नष्ट हो जाती है। इस व्रत से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

॥ अथ जया एकादशी माहात्म्य ॥

धर्मराज युधिष्ठिर बोले-हे भगवान! आपने माघ माह की कृष्ण पक्ष की षटतिला एकादशी का अत्यन्त सुन्दर वर्णन किया है। अब कृपा कर माघ माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी की कथा का वर्णन कीजिये। इस एकादशी का नाम, विधि और देवता क्या और कौन सा है?

श्रीकृष्ण भगवान बोले-हे राजन! माघ माह की शुक्लपक्ष की एकादशी का नाम जया है। इस एकादशी व्रत से मनुष्य ब्रह्महत्या के पाप से छूट जाते हैं और अन्त में उनको स्वर्ग प्राप्ति होती है। इस व्रत से मनुष्य कुयोनि अर्थात भूत, प्रेत, पिशाच आदि की योनि से छूट जाता है। अतः इस एकादशी के व्रत को विधि पूर्वक करना चाहिये। हे राजन! मैं एक पौराणिक कथा कहता हूँ।

एक समय इन्द्र नाग-लोक में अपनी इच्छानुसार अप्सराओं के साथ रमण कर रहा था। गन्धर्वगान कर रहे थे। वहां गन्धर्वों में प्रसिद्ध पुष्पवन्त, उसकी

लड़की तथा चित्रसेन की स्त्री मलिन ये सब थे। उस जगह मलिन का लड़का पुष्पवान और उसका लड़का माल्यवान भी था। उस समय पुष्पवती नामक एक गन्धर्व स्त्री माल्यवान को देखकर मोहित हो गई और कामबाण से चलायमान होने लगी। उसने रूप, सौन्दर्य, हाव-भाव आदि द्वारा माल्यवान को वश में कर लिया। पुष्पवती के सौंदर्य को देखकर माल्यवान भी मोहित हो गया। अत: ये दोनों कामदेव के वश में हो गये परन्तु फिर भी इंद्र के बुलाने पर नाच गाने के लिये जाना पड़ा और अप्सराओं के साथ गाना शुरू किया। परन्तु कामदेव के प्रभाव से इनका मन न लगा और अशुद्ध गाना गाने लगे। इनकी भाव भृंगियों को देखकर इन्द्र ने इनके प्रेम को समझ लिया और इसमें अपना अपमान समझ इन्द्र इन्हें श्राप दे दिया कि तुम स्त्री पुरुष के रूप में मृत्युलोक में जाकर पिशाच का रूप धारण करो और अपने कर्मों का फल भोगो।

इन्द्र का श्राप सुनकर ये अत्यन्त दु:खी हुये और हिमाचल पर्वत पर पिशाच बनकर दु:ख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने लगे। रात दिन में उन्हें

एक क्षण भी निद्रा नहीं आती थी इस स्थान पर अत्यन्त सर्दी थी। एक दिन पिशाच ने अपनी स्त्री से कहा-न मालूम हमने पिछले जन्म में ऐसे कौन से पाप किये हैं जिससे हमें इतनी दुःखदायी यह पिशाच योनि प्राप्त हुई है।

दैवयोग से एक दिन माघ माह के शुक्लपक्ष की जया नाम की एकादशी आई। इस दिन दोनों ने कुछ भी भोजन न किया और न कोई पाप कर्म ही किया। इस दिन केवल फल-फूल खाकर ही दिन व्यतीत किया और महान दुःख के साथ पीतल के वृक्ष के नीचे बैठ गये। वह रात्रि इन दोनों ने एक दूसरे से चिपट कर बड़ी कठिनता के साथ काटी। सर्दी के कारण उनको रात्रि में निद्रा भी न आई। दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही भगवान के प्रभाव से इनकी पिशाच देह छूट गई और अत्यन्त सुन्दर अप्सरा और गन्धर्व की देह धारण करके तथा सुन्दर वस्त्रों तथा आभूषणों से अलंकृत होकर नागलोक को प्रस्था किया। आकाश में देवगण तथा गन्धर्व इनकी स्तुति तथा पुष्प वर्षा करने लगे। नागलोक में जाकर

इन दोनों ने देवराज इन्द्र को प्रणाम किया। इन्द्र को भी इन्हें अपने प्रथम रूप में देखकर महान आश्चर्य हुआ और इनसे पूछने लगे कि तुमने अपनी पिशाच देह से किस प्रकार छुटकारा पाया सो सब बतलाओ। इस प्रकार माल्यवान बोले कि हे देवेन्द्र! भगवान विष्णु के प्रभाव तथा जया एकादशी के व्रत के पुन्य से हमारी पिशाच देह छूटी है। इन्द्र बोले--हे माल्यवान! एकादशी व्रत करने से तथा विष्णु के प्रभाव से तुम लोग पिशाच की देह को छोड़कर पवित्र हो गए हो और हम लोगों के भी वन्दनीय हो गए हो क्योंकि शिव भक्त हम लोगों के वन्दना करने योग्य हैं। अतः आपको धन्य है! धन्य है!! अब तुम पुष्पवती के साथ जाकर विहार करो।

हे युधिष्ठिर! इस जया एकादशी के व्रत करने से समस्त कुयोनि छुट जाती हैं। जिस मनुष्य ने इस एकादशी का व्रत किया है उसने मानो सब यज्ञ, तप आदि किये हैं। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक जया एकादशी का व्रत करते हैं वे अवश्य ही सहस्त्र वर्ष तक स्वर्ग में निवास करते हैं।

॥ अथ विजया एकादशी माहात्म्य ॥

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि-हे जनार्दन! फाल्गुन माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी का क्या नाम है? तथा उसकी विधि क्या है? सो सब कहिये।

श्रीकृष्ण भगवान बोले कि हे राज राजेश्वर! फाल्गुन माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम विजया है। उसके व्रत के प्रभाव से मनुष्य की विजय मिलती है। इस विजया एकादशी के माहात्म्य के श्रवण व पठन से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

एक समय देवर्षि नारदजी ने जगतपिता ब्रह्मा जी से पूछा कि ब्रह्माजी! आप मुझे फाल्गुन माह के कृष्ण पक्ष की विजया नामक एकादशी का व्रत विधान बतलाइये। ब्रह्मा जी बोले कि हे नारद! विजया एकादशी का व्रत प्राचीन तथा नये पापों को नष्ट करने वाला है। यह समस्त मनुष्यों को विजय प्रदान करता है।

त्रेतायुग में श्रीरामचन्द्रजी को जब चौदह व
के लिये बनवास हो गया तब वह श्रीलक्ष्मण
तथा जानकी जी सहित पंचवटी में निवास क
लगे। इस जगह रावण ने श्री सीता जी का ह
किया। इस दुःखद समाचार से श्रीरामजी अत्य
व्याकुल हुये और श्रीसीताजी की खोज में चल दि
घूमते २ वे मरणासन्न जटायु के पास पहुँचे। कु
आगे चलकर इनकी सुग्रीव के साथ मित्रता हो
और बालि का वध किया। श्री हनुमानजी ने लं
में जाकर सीता जी का पता लगाया। वहाँ से ल
कर हनुमानजी श्री रामचन्द्र जी के पास आये अ
सब समाचार कहे। श्रीरामचन्द्र जी ने सुग्रीव
सम्मति लेकर वानरों, भालुओं की सेना सहित लं
को प्रस्थान किया। जब श्रीरामचन्द्र जी समुद्र
किनारे पहुँच गये तब उन्होंने महान अगाध, मगरम
से युक्त समुद्र को देखकर श्रीलक्ष्मण जी से क
हे लक्ष्मण! समुद्र को हम किस प्रकार पार कर सके

श्री लक्ष्मण जी बोले कि हे श्रीरामजी! यहाँ से क़रीब आधा योजन की दूरी पर कुमारी द्वीप पर बकदालभ्य नाम के मुनि रहते हैं। आप उनके पास जाकर इसका उपाय पूछिये। लक्ष्मण जी के वचनों को सुनकर श्रीरामचन्द्रजी बकदालभ्य ऋषि के पास गये और उनको प्रणाम करके बैठ गये। मुनि ने उनसे पूछा हे श्रीरामजी! आप कहाँ से पधार हैं। श्री राम बोले कि हे महर्षि! मैं अपनी सेना सहित यहां आया हूँ और राक्षसों को जीतने लंका जा रहा हूँ। आप कृपाकर समुद्र पार करने का कोई उपाय बतलाइये। बकदालभ्य ऋषि बोले-हे श्रीरामजी! मैं आप को एक उत्तम व्रत बतलाता हूँ। फाल्गुन माह के कृष्ण पक्ष की विजया एकादशी का व्रत करने से तुम समुद्र से अवश्य ही पार होंगे और तुम्हारी विजय होगी। हे श्रीरामजी! इस व्रत की विधि यह है। दशमी के दिन स्वर्ण, चाँदी, तांबा या मिट्टी किसी का एक घड़ा बनावें। उस घड़े को जल से भरकर तथा उस पर पंचपल्लव रखकर वेदिका पर स्थापित करे। घड़े के नीचे सतनजा (सात नाज मिले हुए)

और ऊपर जौ रखें। उस पर श्रीनारायण भगवा
की स्वर्ण प्रतिमा स्थापित करें। एकादशी के दि
स्नान आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर धूप, दीप
नैवेद्य, नारियल आदि से भगवान की पूजा करें
उस दिन भक्ति पूर्वक घड़े के सामने व्यतीत क
और रात्रि को भी उसी तरह बैठे रहकर जागर
करना चाहिये। द्वादशी के दिन नदी या तालाब वे
किनारे स्नान आदि से निवृत्त होकर उस घड़े क
ब्राह्मण को दे देना चाहिए। हे राम! यदि तुम इ
व्रत को सेनापतियों के साथ करोगे तो अवश्य ह
विजयी होगे। श्रीरामचन्द्रजी ने विधिपूर्वक विजय
एकादशी का व्रत किया और इसके प्रभाव से दैत्य
के ऊपर विजय पाईं।

अतः हे राजन! जो मनुष्य इस व्रत को वि
पूर्वक करेगा, उसकी दोनों लोकों में विजय होगी
श्री ब्रह्माजी ने नारदजी से कहा था कि पुत्र! जो इ
व्रत का माहात्म्य सुनता है उसको वाजपेय यज्ञ वे
फल की प्राप्ति होती है।

॥ अथ आमल की एकादशी माहात्म्य ॥

मान्धाता जी बोले-हे वशिष्ठजी! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो व्रत की कथा कहो जिससे मेरा कल्याण हो। वशिष्ठजी बोले-हे राजन! सब व्रतों से उत्तम और अंत में मोक्ष देने वाला, आमल की एकादशी का वर्णन करता हूं, यह फाल्गुन माह के शुक्लपक्ष में होती है। इस व्रत का पुन्य एक हजार गौदान के फल के बराबर है। मैं आपसे एक पौराणिक कथा कहता हूँ। एक वैदिक नामक नगर में ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्री, शुद्र चारों वर्ण आनन्दपूर्वक रहते थे। उस नगर में चैत्ररथ नामक चन्द्रवंशी राजा था। वह महाविद्वान तथा धार्मिक था, वहाँ के निवासी वृद्ध से बालक, प्रत्येक एकादशी का व्रत करते थे।

एक समय फाल्गुन मास के शुक्लपक्ष को आमल नामक एकादशी आई। उस दिन राजा से प्रजा तक वृद्ध से बालक तक सबने हर्ष सहित उस एकादशी का व्रत किया। राजा अपनी प्रजा के साथ मन्दिर में

जाकर पूर्ण कुम्भ स्थापित करके तथा धूप, दीप, नैवेद्य, पंचरत्न, क्षत्र आदि से धात्री का पूजन करने लगे। वे सब धात्री की इस प्रकार स्तुति करने लगे- हे धात्री! तुम ब्रह्म स्वरूप हो। तुम ब्रह्मा जी द्वारा उत्पन्न हो और सारे पापों को नष्ट करने वाली हो, तुमको नमस्कार है। अब तुम अर्घ्य स्वीकार करो। तुम श्री रामचन्द्रजी द्वारा सम्मानित हो। मैं आपकी प्रार्थना करता हूं। मेरे समस्त पापों को हरण करो।

उस देवालय में रात्रि को सबने जागरण किया रात्रि के समय उस जगह एक बहेलिया आया। वह महापापी तथा दुराचारी था। वह भूखा प्यासा था उस जगह विष्णु भगवान की कथा एकादशी माहात्म्य सुनने लगा। बहेलिया ने उस रात्रि को अन्य लोगों के साथा जागकर व्यतीत किया। प्रातःकाल होते ही सभी लोग अपने-२ घर गये। कुछ समय बीतने के पश्चात उस बहेलिया की मृत्यु हुई और उस आमक की एकादशी के व्रत तथा जागरण के प्रभाव से उसने राजा विदूरथ के घर जन्म लिया।

उसका नाम बसुरथ रखा गया। बड़े होने पर वह चतुरंगिणी सेना के सहित तथा धन-धान्य से युक्त होकर दस सहस्त्र ग्रामों का पालन करने लगा। वह तेज में सूर्य के, कान्ति में चन्द्रमा के, वीरता में विष्णु भगवान के और क्षमा में पृथ्वी के समान था। वह अत्यंत धार्मिक, सत्यवादी, कर्मवीर और विष्णु भक्त था। वह सदैव यज्ञ किया करता था।

एक दिन वह राज़ा शिकार खेलने के लिये गया। दैवयोग से वह राजा रास्ता भूल गया। तब वह उसी वन में एक वृक्ष के नीचे सो रहा। उसी समय पहाड़ी म्लेच्छ वहाँ आये और राजा को अकेला देखकर उस पर मारो-२ का शब्द करके टूट पड़े। वह म्लेच्छ कहने लगे कि इस दुष्ट राजा ने हमारे सम्बन्धियों को मारा है तथा देश से निकाल दिया है। अतः इसे अब अवश्य मारना चाहिये। ऐसा कहकर वह म्लेच्छ राजा पर अस्त्र शस्त्र का प्रहार करने लगे। उनके अस्त्र शस्त्र राजा के शरीर पर गिरते ही नष्ट हो जाते और उसको पुष्पों के समान प्रतीत होते। उन म्लेच्छो के अस्त्र-शस्त्र उन पर उल्टा प्रहार करने लगे जिससे

वे मूर्छित हो गये। उस समय राजा के शरीर से एक दिव्य स्त्री प्रकट हुई जो अत्यंत सुन्दर तथा सुन्दर वस्त्रों तथा आभूषणों से अलंकृत थी। उसकी भृकुटी टेढ़ी थी, आँखें से लाल २ अग्नि निकल रही थी। वह म्लेच्छों को मारने दौड़ी और समस्त म्लेच्छों को काल के गाल में पहुंचा दिया। अब राजा जब जगा तब इन म्लेच्छों को मरा हुआ देखकर सोचने लगा कि इन शत्रुओं को किसने मारा है। जब वह राजा ऐसा विचार कर रहा था तब ही आकाशवाणी हुई और कहने लगी हे राजन! इस संसार में तेरी विष्णु भगवान के अतिरिक्त कौन रक्षा कर सकता है इस आकाशवाणी को सुनकर राजा अपने नगर को वापिस आ गया और सुख पूर्वक राज करने लगा।

महर्षि वशिष्ठ जी बोले-हे राजन यह सब आमल की एकादशी के व्रत का प्रभाव था। जो मनुष्य इस आंमल की एकादशी को व्रत करते हैं वे सब प्रत्येक कार्य में सफल होते हैं और अन्त में विष्णु लोक में जाते हैं।

॥ अथ पापमोचनी एकादशी माहात्म्य ॥

धर्मराज युधिष्ठिर बोले-हे भगवान! मैंने फाल्गुन माह की शुक्लपक्ष की एकादशी का माहात्म्य सुना अब आप चैत्र माह के कृष्णपक्ष की एकादशी के बारे में बतलाइये। इस एकादशी का नाम, इसमें कौन से देवता की पूजा की जाती है तथा विधि क्या है? सो सब सविस्तार पूर्वक कहिये।

श्री कृष्ण भगवान बोले-हे राजन! एक समय मान्धाता ने लोमश ऋषि से ऐसा ही प्रश्न पूछा था तब लोमश ऋषि ने उत्तर दिया हे राजन! चैत्र माह के कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम पापमोचनी है। इसके व्रत के प्रभाव से मनुष्यों के अनेक पाप नष्ट हो जाते हैं। इसकी कथा इस प्रकार है।

प्राचीन समय में एक चैत्ररथ वन में अप्सरायें वास करती थीं। वहां हर समय बसन्त रहता था। उस वन में एक मेधावी नामक मुनि तपस्या करते थे। वे शिव भक्त थे। एक दिन मंजुघोषा नामक

एक अप्सरा उनको मोहित करने के लिए सितार बजाकर मधुर २ गाने गाने लगी। उस समय शिव के शत्रु अनंग (कामदेव) भी शिव भक्त मेधावी मुनि को जीतने के लिए तैयार हुए। कामदेव ने उस सुन्दर अप्सरा के भ्रू को धनुष बनाया। कटाक्ष को उसकी प्रत्यंचा (डोरी बनाई) उसके नेत्रों को उसने संकेत बनाया और कुचों को कुरी बनाया। उस मंजुघोषा अप्सरा को सेनापति बनाया। इस तरह कामदेव अपने शत्रुभक्त को जीतने को तैयार हुआ।

इस समय मेधावी मुनि भी युवा तथा हृष्ट पुष्ट थे। उन्होंने यज्ञोपवीत तथा दण्ड धारण कर रखा था। उन मुनि को देखकर मंजुघोषा ने धीरे-२ मधुरवाणी से वीणा पर गाना शुरू किया। मेधावी मुनि भी मंजुघोषा के मधुर गान पर तथा उसके सौन्दर्य पर मोहित हो गये। वह अप्सरा उन मुनि को कामदेव से पीड़ित जानकर आलिंगन करने लगी। वह मुनि उसके सौन्दर्य पर मोहित होकर शिवरहस्य को भूल गये और काम के वशीभूत होने के कारण उन्हें दिन

रात्रि का कुछ भी ध्यान न रहा। एक दिन मंजुघोषा उस मुनि से बोली हे मुनि! अब मुझे बहुत समय हो गया है। स्वर्ग जाने की आज्ञा दीजिए उस अप्सरा के ऐसे वचनों को सुनकर मुनि बोले-हे सुन्दरी! तू तो आज इस संध्या को आई है। अभी प्रातःकाल तक ठहरो। मुनि के वचनों को सुनकर वह उनके साथ रमण करने लगी और बहुत समय बिता दिया। फिर उसने मुनि से कहा-हे मुनिदेव! अब आप मुझे स्वर्ग को जाने की आज्ञा दीजिये। मुनि बोले-अरी! अभी तो कुछ भी समय नहीं हुआ है अभी कुछ और देर ठहर इस पर वह अप्सरा बोली-हे मुनि! आपकी रात्रि तो बहुत लम्बी है। अब आप सोचिये कि मुझे आपके पास आये कितना समय हो गया। उस अप्सरा के वचनों को सुनकर मुनि को ज्ञान प्राप्त हो गया और समय का विचार करने लगे। जब रमण करने का समय का प्रमाण ५७ साल ७ माह और ३ दिन ज्ञात हुआ तो उस अप्सरा को काल

का रूप समझने लगे। वह महान क्रोधित हुए और तप नाश करने वाली अप्सरा की तरफ देखने लगे। उनके अधर कांपने लगे और इन्द्रियाँ व्याकुल होने लगीं। वह मुनि उस अप्सरा से बोले-हे दुष्ट! मेरे तप को नष्ट करने वाली! तू अब मेरे श्राप से पिशाचिनी हो जा। तू महान पापिनी और दुराचारिणी है। तुझे धिक्कार है।

उस मुनि के श्राप से वह पिशाचनी हो गई तब वह बोली-हे मुनि! अब मुझ पर क्रोध को त्यागकर प्रसन्न हो जाओ और इस शाप का निवारण कीजिये। तब मुनि को कुछ शांति मिली और पिशाचिनी से बोले-रे दुष्ट! मैं शाप से छूटने का उपाय बतलाता हूं। चैत्र माह के कृष्णपक्ष की जो एकादशी है उस का नाम पापमोचनी है उस एकादशी का व्रत करने से तेरी पिशाचनी की देह छूट जायेगी। इस प्रकार मुनि ने उसको समस्त विधि आदि बतला दी और अपने पिता च्यवन ऋषि के पास गये! च्वयन ऋषि

अपने पुत्र को देखकर बोले-रे पुत्र! तूने यह क्या किया? तेरे समस्त तप नष्ट हो गये हैं। मेधावी बोले-हे पिताजी मैंने बहुत बड़ा पाप किया है। आप उसके छूटने का कोई उपाय बतलाइये। च्यवन ऋषि बाले-हे तात! तुम चैत्र माह के कृष्णपक्ष को पापमोचनी नाम की एकादशी का विधि तथा भक्ति पूर्वक व्रत करो, वचनों को सुनकर मेधावी ऋषि ने पापमोचनी एकादशी का विधिपूर्वक उपवास किया उसके प्रभाव से इनके समस्त पाप नष्ट हो गये। मंजुघोषा अप्सरा भी पापमोचनी एकादशी का व्रत करने से पिशाचनी की देह से छूट गई और सुन्दर रूप धारण करके स्वर्गलोक को चली गई।

लोमश बोले-हे राजन! इस पापमोचनी एकादशी के प्रभात से सब पाप नष्ट हो जाते हैं। इस एकादशी कथा के श्रवण व पढ़ने से एक हजार गोदान करने का फल मिलता है। इस व्रत के करने से ब्रह्महत्या करने वाले, अगम्बा गमन करने वाले आदि के पाप नष्ट हो जाते हैं। और अन्त में स्वर्ग को जाते हैं।

॥ अथ कामदा एकादशी माहात्म्य ॥

धर्मराज युधिष्ठिर बोले-हे भगवान! आपको कोटि बार प्रणाम है। आपसे निवेदन करता हूँ आप कृपा कर चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी का वर्णन कीजिये। श्रीकृष्ण भगवान बोले कि हे राजन आप एक पुरानी कथा सुनिये जिसको राजा दिलीप से वशिष्ठजी ने कही थी। राजा दिलीप ने पूछा कि गुरुदेव! चैत्र माह के शुक्लपक्ष की एकादशी का क्या नाम है? इसमें किस देवता की पूजा होती है तथा इसकी विधि क्या है? सो कहिये। महर्षि वशिष्ठजी बोले-हे राजन! चैत्र माह के शुक्लपक्ष की एकादशी का नाम कामदा है, यह पापों को नष्ट कर देती है। और पुत्र की प्राप्ति होती है। इसके व्रत से कुयोनि छूट जाती है और अन्त में स्वर्ग की प्राप्ति होती है अब मैं इसका माहात्म्य कहता हूँ ध्यान पूर्वक सुनो।

प्राचीन काल में एक भोगीपुर नामक नगर में पुण्डरीक नामक एक राजा राज्य करता था। वहाँ

अनेकों अप्सरा, गन्धर्व, किन्नर आदि वास करते थे। उसी जगह ललिता और ललित नाम के दो स्त्री पुरुष अत्यन्त वैभवशाली घर में निवास करते हुये विहार किया करते थे।

एक समय राजा पुण्डरीक गन्धर्वों सहित एक सभा में क्रीड़ा कर रहे थे। उस जगह ललित गन्धर्व भी उनके साथ गाना गा रहा था और उसकी प्रियतमा ललिता उस जगह नहीं थी। इससे वह उसको याद करने के कारण अशुद्ध गाना गाने लगा। नामराज कर्कोटक ने राजा पुण्डरीक से इसकी चुगली खादी। इस पर राजा पुण्डरीक ने ललित को शाप दे दिया। कि अरे दुष्ट! तू मेरे सामने गाता हुआ भी अपनी स्त्री का स्मरण कर रहा है। इससे तू कच्चे माँस और मनुष्यों को खाने वाला राक्षस होगा। राजा पुण्डरीक के श्राप से वह ललित गन्धर्व उसी समय एक विकराल राक्षस हो गया। उसका आठ योजन का शरीर हो गया। राक्षस हो जाने पर उस को महान दुःख मिलने लगे और अपने कर्म का फल भोगने लगा।

जब ललिता को अपने प्रियतम ललित का ऐसा हाल मालूम हुआ तो वह बहुत दुःखी हुई। वह सदैव अपने पति के उद्धार के लिये सोचने लगी कि मैं कहाँ जाऊँ और क्या करूँ एक दिन वह घूमते-२ विन्ध्याचल पर्वत चली गई। उसने उस जगह श्रृंगी ऋषि का आश्रम देखा। वह शीघ्र ही उस आश्रम के पास गई और उस ऋषि के सम्मुख जाकर विनय करने लगी।

उसे देखकर श्रृंगी ऋषि बाले-हे सुभगे! तुम कौन हो और यहाँ किस लिये आई हो? ललिता बोली-हे मुनि। मैं वीर धन्वा नामक गन्धर्व की कन्या ललिता हूँ। मेरा पति राजा पुण्डरीक के शाप से एक भयानक राक्षस हो गया है। आप राक्षस योनि से छूटने का कोई श्रेष्ठ उपाय बतलाइये। तब श्रृंगी ऋषि बाले-अरी गन्धर्व कन्या ललिता। अब चैत्र माह के शुक्लपक्ष की एकादशी आने वाली है। उस का नाम कामदा एकादशी है। उसके व्रत करने से मनुष्य के समस्त कार्य शीघ्र ही सिद्ध हो जाते हैं।

यदि तू उसके व्रत के पुण्य को अपने पति को देती है तो वह शीघ्र ही राक्षस योनि से छूट जायेगा।

मुनि के वचनों को सुनकर ललिता ने आनन्द पूर्वक उसका व्रत किया और द्वादशी के दिन ब्राह्मणों के सामने अपने व्रत का फल अपने पति को देने लगी और भगवान से इस तरह प्रार्थना करने लगी हे प्रभो! मैंने जो व्रत किया है वह राक्षस योनि से शीघ्र ही छूट जाय। एकादशी का फल देते ही उसका पति राक्षस की योनि से छूट गया और अपने पुराने स्वरूप को प्राप्त हुआ। वह पहले की भांति ललिता के साथ विहार करने लगा। कामदा एकादशी के प्रभाव से ये पहले की भाँति अब अधिक सुन्दर हो गए और पुष्पक विमान पर बैठकर स्वर्गलोक को चले गये।

हे राजन! इस व्रत को विधिपूर्वक करने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं। इसके व्रत से मनुष्य ब्रह्म हत्या इत्यादि के पाप और राक्षस आदि की योनि से छूट जाते हैं। इसकी कथा व माहात्म्य के श्रवण व पठन से वाजपेय यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

॥ अथ बरूथिनी एकादशी माहात्म्य ॥

धर्मराज युधिष्ठिर बोले-हे भगवान वैशाख माह के कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम तथा उस की विधि क्या है और उससे कौन से फल की प्राप्ति होती हैं सो कृपापूर्वक कहिये।

श्रीकृष्ण भगवान बोले-हे राजेश्वर! वैशाख माह के कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम बरूथिनी है। यह सौभाग्य को देने वाली है इसके व्रत में मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और अंत में सुख मिलता है। यदि इस व्रत को एक अभागिनी स्त्री करती है तो उसे सौभाग्य मिलता है। बरूथिनी के व्रत के प्रभाव से ही राजा मान्धाता स्वर्ग को गया था। इसी प्रकार धुन्धमार आदि भी स्वर्ग को गये। बरूथिनी एकादशी के व्रत का फल दस सहस्त्र वर्ष तपस्या करने के फल के बराबर है। कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण के समान जो एक भार स्वर्णदान करने से फल मिलता है वही फल बरूथिनी एकादशी के

व्रत के करने से मिलता है। बरूथिनी एकादशी के व्रत से मनुष्य इस लोक और परलोक दोनों में सुख प्राप्त करते हैं और अन्त में स्वर्ग को जाते हैं।

शास्त्रों में कहा गया है कि हाथी का दान घोड़े के दान से और हाथी के दान से भूमि का दान उत्तम है। उससे उत्तम तिलों का दान है। तिल से स्वर्ण दान स्वर्ण से अन्नदान श्रेष्ठ है। संसार में अन्नदान के बराबर कोई भी दान नहीं है। अन्नदान से पितृ, देवता, मनुष्य आदि सब तृप्त हो जाते हैं। शास्त्रों में कन्यादान इसके बराबर माना गया है। बरूथिनी एकादशी के व्रत से अन्न तथा कन्यादान का फल मिलता है जो मनुष्य लाभ के वश में होकर कन्या का धन ले लेते हैं वे प्रलय के अन्त तक नरक में पड़े रहते हैं। या उनको अगले जन्म में बिलाव का जन्म ग्रहण करना पड़ता है। जो मनुष्य प्रेम से एवं धन सहित कन्या दान करते हैं उनके पुण्य को चित्रगुप्त भी लिखने में असमर्थ हो जाता है। जो मनुष्य इस बरूथिनी एकादशी का व्रत करते हैं, उन को कन्यादान का फल मिलता है।

बरूथिनी एकादशी का व्रत करने वाले को दशमी के दिन से निम्नलिखित दस वस्तुओं को त्याग देना चाहिए-

१. कांसे के बर्तनो में भोजन करना, २. मांस ३. मसूर की दाल, ४. चना, ५. कोदों, ६. शक ७. मधु (शहद), ८. दूसरे का अन्न, ९. दूसरी बार भोजन करना, १०. स्त्री संग या अन्य किसी के साथ मैथुन करना।

उस दिन जुआ नहीं खेलना चाहिए तथा शयन नहीं करना चाहिए। उस दिन पानखाना, दाँतुन करना, दूसरे की निन्दा करना तथा चुगली खाना और पापियों के साथ बात-चीत भी नहीं करनी चाहिए। उस दिन क्रोध, मिथ्या भाषण का त्याग कर देना चाहिए। इस व्रत में नमक, तेल तथा अन्न वर्जित है।

हे राजन जो मनुष्य इस एकादशी को विधिवत करते हैं उनको स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। इस व्रत के माहात्म्य को पढ़ने से एक सहस्त्र गौ दान

का फल प्राप्त होता है। इसका फल गंगा के स्नान करने के फल से भी अधिक है।

॥ अथ मोहिनी एकादशी माहात्म्य ॥

धर्मराज युधिष्ठिर बोले-हे कृष्ण! वैशाख माह की शुक्लपक्ष की एकादशी का क्या नाम तथा क्या कथा है? इसकी व्रत करने की कौन सी विधि है? सो सब विस्तार पूर्वक कहिए।

श्रीकृष्ण भगवान बोले कि हे धर्मनन्दन! मैं एक कथा कहता हूँ जिसको महर्षि वशिष्ठजी ने श्रीरामचन्द्रजी से कहा था। श्रीरामचन्द्रजी बोले-हे गुरुदेव! आप मुझसे कोई ऐसा व्रत कहिए जिससे समस्त पाप और दुःख नष्ट हो जावें।

महर्षि वशिष्ठ बोले-हे राम! आपके नाम के स्मरण मात्र से ही मनुष्य पवित्र हो जाता है, इसलिए आपका यह प्रश्न लोक हित में अवश्य होगा। वैशाख माह के शुक्लपक्ष में एकादशी होती है उसका नाम

मोहिनी है। इस एकादशी का व्रत करने से मनुष्य के समस्त पाप तथा दुःख छूट जाते हैं। इसके व्रत के प्रभाव से प्राणी मोह जाल से छूट जाता है। अतः हे राम! इस एकादशी का व्रत दुःखी मनुष्यों को अवश्य ही करना चाहिए। एकादशी के व्रत से मनुष्य के समस्त पाप दुःख नष्ट हो जाते हैं। अब आप इसकी कथा सुनिये।

सरस्वती नदी के किनारे एक भद्रावती नगरी में एक धनपाल नाम का धनधान्य से पुण्यवान एक वैश्य रहता था। वह अत्यन्त धर्मात्मा था और विष्णु भक्त था। उसने नगर में अनेकों भोजनालय, प्याऊ, कुआ, तालाब, धर्मशाला आदि बनवाये। उसने सड़ाको के किनारे अनेक वृक्ष लगवाये। उस वैश्य के पांच पुत्र थे। उसका सबसे बड़ा पुत्र अत्यन्त पापी था। वह दूसरों की स्त्रियों के साथ भोग-विलास करता था। वह महान नीच था और देवता पितृ आदि को नहीं मानता था। वह अपने पिता के धन को बुरे

व्यसनों में खर्च किया करता था। इस पर उसके पिता, भाइयों तथा कुटुम्बियों ने घर से बाहर निकाल दिया और उसकी निन्दा करने लगे।

घर से निकाल देने के बाद धन नष्ट हो जाने पर वेश्याओं ने तथा गुण्डों ने भी उसका साथ छोड़ दिया। अब वह भूख और प्यास से दुःखी रहने लगा। अब उसने चोरी करने का विचार किया और रात्रि में चोरी करने लगा। एक दिन वह पकड़ा गया और राजा ने उसे कारागार में बन्द कर दिया। कारागार में राजा ने उसको बहुत दुःख दिये और उससे नगर छोड़ने को कहा अंत में वह दुःखी होकर नगरी को छोड़ गया और जंगल में रहने लगा। वह बहेलिया बन गया और धनुष बाण से पशु-पक्षियों को मार-२ कर लाने लगा।

एक दिन वह पापी भूख और प्यास से व्याकुल खाने की खोज में निकल पड़ा और कोटिन्य ऋषि के आश्रम पर जा पहुंचा। उस समय वैशाख का महीना था। कोटिन्य ऋषि गंगा स्नान करने आये

थे। उन के भीगे वस्त्रों के छींटे मात्र से इस पापी को कुछ सुबुद्धि प्राप्त हुई। वह पापी मुनि के पास जाकर हाथ जोड़कर कहने लगा-हे मुनि! मैंने अपने जीवन में बहुत से पाप किये हैं। आप उन पापों से छूटने का कोई साधारण और बिना धन का उपाय बतलाइये। तब ऋषि बोले कि तू ध्यान देकर सुन। तू वैशाख माह के शुक्लपक्ष की एकादशी का व्रत कर इस एकादशी का नाम मोहनी है। इसका व्रत करने से तेरे समस्त पाप नष्ट हो जायेंगे। मुनि के वचनों को सुनकर वह बहुत खुश हुआ और मुनि की बतलाई हुई विधि के अनुसार उसने मोहिनी एकादशी का व्रत किया।

हे रामजी! उस व्रत के प्रभाव से उसके सभी पाप नष्ट हो गये और अन्त में गरुड़ पर चढ़कर विष्णुलोक गया। इस व्रत से मोह आदि भी नष्ट हो जाते हैं। इसके माहात्म्य को श्रवण व पठन से एक सहस्त्र गौदान के बराबर पुण्य मिलता है।

॥ अपरा एकादशी माहात्म्य ॥

श्रीयुधिष्ठिर बोले-हे भगवान! ज्येष्ठ मास की कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम तथा माहात्म्य क्या है? सो कृपा कर कहिये। श्रीकृष्ण भगवान बोले कि हे राजन! ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम अपरा है। यह पुण्य देने वाली है जो मनुष्य इस एकादशी का व्रत करते हैं उनकी लोक में प्रसिद्धि होती है।

अपरा एकादशी के व्रत के प्रभाव से ब्रह्महत्या, भूत योनि, दूसरे की निन्दा आदि के पाप नष्ट हो जाते हैं। इसके व्रत से पर स्त्री के साथ भोग करने वालों की, झूठी गवाही, असत्य भाषण, झूठा वेद पढ़ना, झूठा शास्त्र बनाना, झूठा ज्योतिषी, झूठा वैद्य आदि सबके पाप नष्ट हो जाते हैं। जो क्षत्रीय युद्ध क्षेत्र से भाग जाय तो वह नरक को जाता हैं। जो शिष्य गुरु से विद्या-ग्रहण करते हैं परन्तु बाद में उसकी निंदा करते हैं तो वह अवश्य ही नरक को जाते हैं। वह भी अपरा का व्रत करने से स्वर्ग को

चले जाते हैं।

जो फल तीनों पुष्करों में स्नान करने से या कार्तिक मास में स्नान करने गे अथवा गंगा जी के तट पर पितरों को पिण्डदान करने से या सिंह राशि वालों को बृहस्पति के दिन गोमती में स्नान करने से, कुम्भ में श्री केदारनाथ जी के दर्शन करने से तथा बद्रिकाश्रम में रहने से तथा सूर्य चन्द्र ग्रहण में कुरुक्षेत्र में स्नान करने से मिलता है वह फल अपरा एकादशी के व्रत के बराबर है।

हाथी घोड़े के दान से तथा यज्ञ में स्वर्ण दान से जो फल मिलता है। हाल की ब्याई हुई गाय या स्वर्ण के दान का फ़ल भी इसके फल के बराबर होता है।

अपरा एकादशी के दिन भक्ति पूर्वक विष्णु भगवान का पूजन करना चाहिये जिससे अन्त में विष्णु पद की प्राप्ति होती है।

हे राजन! मैंने यह अपरा एकादशी की कथा लोकहित के लिए कही है। उसके पढ़ने व सुनने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

॥ अथ निर्जला एकादशी माहात्म्य ॥

श्रीभीमसेन बोले-हे पितामह! भ्राता युधिष्ठिर माता कुन्ती, द्रोपदी, अर्जुन, नकुल और सहदेव आदि एकादशी के दान व्रत करते हैं और मुझसे एकादशी के दिन अन्न खाने को मना करते हैं। मैं उनसे कहता हूं कि भाई मैं भक्तिपूर्वक भगवान की पूजा कर सकता हूँ, परन्तु मैं एकादशी के दिन भूखा नहीं रह सकता। इस व्यास जी बोले-हे भीम सेन! यदि तुम नरक को बुरा और स्वर्ग को अच्छा समझते हो, तो प्रत्येक माह की दोनों एकादशियों को अन्न न खाया करो। इस पर भीमसेन बोला-हे पितामह! मैं आपसे प्रथम कह चुका हूं कि मैं एक दिन एक समय भी भोजन किये बिना नही रह सकता फिर मेरे लिये पूरे दिन का उपवास करना कठिन है। यदि मैं प्रयत्न करूँ तो एक व्रत अवश्य कर सकता हूँ। अतः आप मुझे कोई एक व्रत बतलाइये, जिससे मुझे स्वर्ग की प्राप्ति हो।

श्रीव्यासजी बोले-हे वायुपुत्र! बड़े-२ ऋषि और महर्षियों ने बहुत से शास्त्र आदि बनाये हैं कि मनुष्य को दोनों पक्षों की एकादशियों का व्रत करना चाहिये। इससे उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

श्रीव्यासजी के वचनों को सुनकर भीमसेन नर्क में जाने के कारण अत्यन्त भयभीत हुए और लता के समान काँपने लगे। वह बोले-हे पितामह! अब मैं क्या करूँ? क्योंकि मुझसे व्रत नहीं हो सकता। अतः आप मुझे कोई एक ही व्रत बतलाइये, जिससे मेरी मुक्ति हो जाय। इस पर श्रीव्यासजी बोले-हे भीमसेन! कृष्ण और मिथुन संक्रांति के मध्य में ज्येष्ठ माह की शुक्लपक्ष की एकादशी होती है। उसका निर्जला व्रत करना चाहिए। इस एकादशी के व्रत में स्नान और आचमन में जल वर्जित नहीं है लेकिन आचमन में ३ माशे जल से अधिक जल नहीं लेना चाहिए। इस आचमन से शरीर की शुद्धि हो जाती है। आचमन में ७ माशे से अधिक जल मद्यपान के समान है। इस दिन भोजन करने से व्रत नष्ट हो जाता है।

यदि सूर्योदय से सूर्यास्त तक मनुष्य जलपान न करे तो उसे बारह एकादशी के फल की प्राप्ति होती है। द्वादशी के दिन सूर्योदय से पहले ही उठना चाहिये और स्नान करके ब्राह्मण को यथा योग्यदान देना चाहिये। इसके पश्चात भूखे ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिये। तत्पश्चात स्वयं भोजन करना चाहिये। इसका फल सम्पूर्ण एकादशियों के फल के बराबर है। हे भीमसेन! स्वयं भगवान ने मुझसे कहा था कि इस एकादशी का पुण्य समस्त तीर्थों और दानों के पुण्य के बराबर है। एक दिन निर्जल रहने से मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है। जो मनुष्य निर्जल एकादशी का व्रत करते हैं उसको मृत्यु के समय भयानक यमदूत नहीं दीखते हैं। उस समय भगवान विष्णु के यमदूत स्वर्ग से आते हैं और उनको पुष्पक विमान पर बिठा कर स्वर्ग ले जाते हैं। अतः संसार में सबसे श्रेष्ठ निर्जला एकादशी का व्रत है। अतः यत्नपूर्वक इस एकादशी का निर्जल व्रत करना चाहिए। उस दिन ''ओ३म नमो भगवते वासुदेवाय'' मन्त्र उच्चारण करना चाहिए। व्यासदेव जी के ऐसे

वचन सुनकर उसने निर्जल व्रत किया। इसी एकादशी को भीमसेनी या पाण्डव एकादशी भी कहते हैं। निर्जल व्रत करने से पहले भगवान की पूजा करनी चाहिए और उनसे विनय करनी चाहिए कि दूसरे दिन भोजन करूँगा। मैं इस व्रत को श्रद्धापूर्वक करूँगा। इससे मेरे सब पाप नष्ट हो जाते हैं। इस दिन एक बड़े वस्त्र से ढककर स्वर्ण सहित दान करना चाहिये।

जो मनुष्य इस व्रत को दो प्रहर में स्नान तप आदि करके करते हैं उनको करोड़ फल स्वर्ण के दान का फल मिलता है। जो मनुष्य इस दिन यज्ञ होमादि करते हैं उसका फल वर्णन भी नहीं हो सकता। इस निर्जला एकादशी के व्रत से मनुष्य विष्णुलोक को जाता है। जो मनुष्य इस दिन अन्न खाते हैं उन्हें चाण्डाल समझना चाहिए। वे अन्त में नरक में जाते हैं। ब्रह्म हत्यारे, मद्यपान करने वाले, चोरी करने वाले, 3 गुरु से द्वेष करने वाले, असत्य बोलने वाले इस व्रत को करने से स्वर्ग को जाते हैं।

हे कुन्ती पुत्र! जो पुरुष या स्त्री इस व्रत को श्रद्धा पूर्वक करते हैं उनका निम्नलिखित कर्त्तव्य है। उन्हें सर्वप्रथम विष्णु भगवान की पूजा करनी चाहिये। तत्पश्चात गौ का दान करना चाहिये। उस दिन ब्राह्मणों को दक्षिणा, मिष्ठान आदि देना चाहिये। निर्जला के दिन अन्न, वस्त्र, छत्र, उपानह आदि का दान करना चाहिये। जो मनुष्य इस कथा को प्रेमपूर्वक सुनते व पढ़ते हैं उनको स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

॥ अथ योगिनी एकादशी माहात्म्य ॥

धर्मराज युधिष्ठिर बोले-हे जनार्दन! अब आप कृपा करके आषाढ़ माह के कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम तथा माहात्म्य क्या है? सो सब वर्णन कीजिये। श्रीकृष्ण भगवान बोले-हे राजन! आषाढ़ माह के कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम योगिनी है। इसके व्रत से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और इस लोक में भोग तथा परलोक में मुक्ति देने वाली है। हे राज राजेश्वर! यह एकादशी तीनों लोकों में प्रसिद्ध

है। मैं आपसे एक पुराणों में कहीं हुई कथा कहता हूँ, ध्यानपूर्वक सुनो।

अलकापुरी नाम की नगरी में एक कुबेर नामक राजा राज्य करता था। वह शिवभक्त था। उसकी पूजा के लिये एक माली पुष्प लाया करता था। उसके विशालाक्षा नाम की अत्यन्त सुन्दर स्त्री थी। एक दिन वह मानसरोवर से पुष्प ले आया, परन्तु कामासक्त होने के कारण पुष्पों को रखकर स्त्री के साथ रमण करने लगा और दोपहर तक न आया। जब राजा कुबेर को उसकी राह देखते 2 दोपहर हो गया तो उसने क्रोधपूर्वक अपने सेवकों को आज्ञा दी कि तुम लोग जाकर हेममाली का पता लगाओ कि वह अभी तक पुष्प क्यों नहीं लाया है? जब यक्षों ने उसका पता लगा लिया तो व कुबेर के पास आकर कहने लगे-हे राजन! वह माली अभी तक अपनी स्त्री के साथ रमण कर रहा है। यक्षों की इस बात को सुनकर कुबेर ने हेममाली को बुलाने की

आज्ञा दी। हेम माली राजा कुबेर के सम्मुख डर से कंपकंपाता हुआ उपस्थित हुआ और प्रणाम किया। उसको देखकर राजा कुबेर को महान क्रोध आया। उसने कहा-हे पापी! महानीच कामी! तूने मेरे पूजनीय ईश्वरों के भी ईश्वर शिवजी का भी अनादर किया है। इससे मैं तुझे श्राप देता हूं कि तू स्त्री का वियोग भोगेगा और मृत्युलोक में जाकर कोढ़ी होगा।

कुबेर के श्राप के प्रभाव से वह उसी क्षण स्वर्ग से पृथ्वी पर गिरा और कोढ़ी हो गया। उसकी स्त्री भी उसी समय अन्तर्ध्यान हो गई। मृत्यु लोक में जाकर उसने महान दुःख भोगे। परंतु शिव जी की भक्ति के प्रभाव से उसकी बुद्धि मलीन न हुई वह हिमालय पर्वत की ओर चल दिया। वहां पर चलते-2 मारकण्डेय ऋषि के आश्रम में पहुँचा। वह ऋषि अत्यन्त वृद्ध तथा तपशाली थे। उनको देखकर वह हेममाली वहाँ गया और उनको प्रणाम करके उनके चरणों में गिर पड़ा।

इसको देखकर मार्कण्डेय ऋषि बोले-कि तूने कौन से कर्म किये हैं जिससे तू कोढ़ी हुआ और महान दुःख भोग रहा है। इस पर हेममाली बोला हे मुनि! मैं यक्षदान कुबेर का सेवक हूं। मैं राजा की पूजा के लिये नित्य प्रति पुष्प लाया करता था। एक दिन अपनी स्त्री के साथ बिहार करते-2 देर हो गई और दुपहर तक पुष्प लेकर न पहुंचा। उन्होंने मुझे श्राप दिया कि तू अपनी स्त्री का वियोग भोग और मृत्युलोक में जाकर कोढ़ी बन तथा दुःख भोग। इससे मैं कोढ़ी हो गया हूँ और महान दुःखभोग रहा हूँ अतः आप कोई ऐसा उपाय बतलाइये जिससे मेरी मुक्ति हो।

इस पर मार्कण्डेय ऋषि बोले कि भाई तूने मेरे सम्मुख सत्य वचन कहे हैं इसलिये मैं तेरे उद्धार के लिये एक व्रत बताता हूं। यदि तू आषाढ़ माह के कृष्णपक्ष की योगिनी नामक एकादशी का विधि पूर्वक व्रत करेगा तो तेरे सभी पाप नष्ट हो जायेंगे।

इस पर हेममाली बहुत प्रसन्न हुआ और मुनि के वचनों के अनुसार योगिनी एकादशी का विधिपूर्वक व्रत किया। इसके प्रभाव से वह फिर अपने पुराने रूप में आ गया और अपनी स्त्री के साथ विहार करने लगा।

हे राजन! इस योगिनी की कथा का फल अट्ठासी सहस्त्र ब्राह्मणों को भोजन कराने के बराबर है। इसके व्रत से समस्त पाप दूर हो जाते हैं और अन्त में स्वर्ग मिलता है।

॥ अथ देवशयनी (पद्मा) एकादशी माहात्म्य ॥

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे भगवान आषाढ़ माह के शुक्लपक्ष की एकादशी का क्या नाम है और उस दिन कौन से देवता की पूजा होती है तथा उसकी विधि क्या है? सो सविस्तार पूर्वक कहिये।

श्रीकृष्ण भगवान बोले-हे राजन! एक समय नारद जी ने ब्रह्माजी से यही प्रश्न पूछा था। तब ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! इस एकादशी का नाम

पद्मा है। इसके व्रत करने से विष्णु भगवान प्रसन्न होते हैं। मैं यहाँ एक पौराणिक कथा कहता हूँ, ध्यान पूर्वक सुनो।

सूर्यवंशी मान्धाता नाम का एक राजर्षि था। एक समय उस राजा के राज्य में तीन वर्ष तक जल न वरसा जिससे राज में अकाल पड़ गया और प्रजा अन्न की कमी के कारण अत्यन्त दुःखी रहने लगी। एक दिन प्रजा राजा के पास जाकर प्रार्थना करने लगी-हे राजन! समस्त विश्व की सृष्टि का मुख्य कारण वर्षा है। इसी वर्षा के अभाव से राज्य में अकाल पड़ गया है और अकाल से प्रजा मर रही है। हे राजन आप कोई ऐसा उपाय बताइये जिससे हम लोगों का दुख दूर हो। इस पर राजा मान्धाता बोला-कि आप लोग ठीक कह रहे हैं। वर्षा से ही अन्न उत्पन्न होता है। वर्षा न होने से आप लोग बहुत दुःखी हैं। राजा के पापों के कारण ही प्रजा को दुख भोगना पड़ता है। मैं बहुत सोच विचार कर

रहा हूं फिर भी मुझे अपना कोई दोष नहीं दिखाई दे रहा है। मैं आप लोगों के दुख को दूर करने के लिये बहुत यत्न कर रहा हूँ।

ऐसा कहकर राजा मान्धाता भगवान की पूजा कर कुछ मुख्य आदमियों को साथ में लेकर वन को चल दिया। वहाँ वह ऋषियों के आश्रम में घूमते-2 अन्त में ब्रह्मा के पुत्र अंगिरा ऋषि के पास पहुँचा। वहाँ मुनि अभी नित्यकर्म से निवृत हुये थे। राजा ने उनके सम्मुख प्रणाम किया और मुनि ने उसको आशीर्वाद दिया और बोले-हे राजा! आप कुशल पूर्वक तो हैं तथा आपकी प्रजा भी कुशल पूर्वक होगी। आप इस स्थान पर कैसे हैं सो कहिये। राजा बोला कि हे महर्षि मेरे राज्य में तीन वर्ष से वर्षा नहीं हो रही है। इससे अकाल पड़ गया है और प्रजा महान दुख भोग रही है। प्रजा के कष्ट को दूर करने के लिये कोई उपाय बतलाइये। इस पर वह ऋषि बोले राजन! यह सतयुग सब युगों में श्रेष्ठ है। इसमें धर्म के चारों चरण सम्मिलित हैं अर्थात् इस

युग में धर्म की सबसे अधिक उन्नति है। इस युग में ब्राह्मणों का तपस्या करना तथा वेद पढ़ना ही मुख्य अधिकार है। परन्तु आपके राज्य में एक शूद्र इस युग में भी तपस्या कर रहा हैं। इस दोष के कारण आपके राज्य में वर्षा नहीं हो रही है। यदि आप प्रजा का भला चाहते हैं तो शूद्र को मार दीजिये। इस पर राजा बोला-कि हे मुनिश्वरो! मैं उस निरपराध तपस्या करने वाले शूद्र को नहीं मार सकता। आप इस दोष से छूटने का कोई अन्य उपाय बताइये। तब ऋषि बोले-हे राजन्! यदि तुम ऐसा ही चाहते हो तो आषाढ़ माह के शुक्लपक्ष की पद्मा नाम की एकादशी का विधि पूर्वक व्रत करो। इस व्रत के प्रभाव से तुम्हारे राज्य में वर्षा होगी और प्रजा सुख पावेगी। क्योंकि इस एकदशी का व्रत सब सिद्धियों को देने वाला और उपद्रवों को शान्ति करने वाला है। इस एकादशी का व्रत तुम प्रजा व सेवक, मन्त्रियों सहित करो। मुनि के वचनों को सुन राजा अपने नगर को वापिस आया और विधि पूर्वक पद्मा एकादशी का व्रत

किया। उस व्रत के प्रभाव से राज्य में वर्षा हुई और मनुष्यों को सुख पहुँचा।

इसलिये यह व्रत सबको करना चाहिए। यह व्रत इस लोक में भोग और परलोक में मुक्ति देने वाला है। इसकी कथा को पढ़ने व सुनने से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

इस एकादशी को देव शयनी एकादशी भी कहते हैं और इस व्रत को करने से विष्णु भगवान प्रसन्न होते हैं। अत: मोक्ष की प्राप्ति के लिये भी मनुष्यों को यह व्रत करना चाहिये। चातुर्मास्य व्रत भी इस एकादशी के व्रत से शुरु किया जाता है।

कुन्ती पुत्र युधिष्ठिर बोले कि हे भगवान! विष्णु भगवान का शयन व्रत किस प्रकार किया जाता है? सब कृपापूर्वक कहिये। श्रीकृष्ण बोले-हे राजन! अब मैं आपको विष्णु के शयन का व्रत कहता हूँ और साथ ही साथ चातुर्मास्य व्रत को भी कहता हूं अब आप ध्यान पूर्वक सुनिये।

जब सूर्य नारायण कर्क राशि में स्थित हों तब विष्णु भगवान को शयन कराना चाहिए और सूर्य नारायण के तुला राशि के आने पर भगवान को उठाना चाहिये। लौंद (अधिक) मास के आने पर भी यह विधि वैसे ही रहती है। इस विधि से अन्य देवताओं को शयन न कराना चाहिये और न उठाना चाहिये। आषाढ़ माह के शुक्लपक्ष की एकादशी का विधि पूर्वक कराना व उस दिन विष्णु भगवान की प्रतिमा बनानी और चातुर्मास्य व्रत का नियम करना चाहिए। सबसे प्रथम उस प्रतिमा को स्नान करावें फिर सफेद वस्त्रों को धारण कराकर तकियादार शैया पर शयन करावे व धूप दीप नैवेद्य आदि से पूजन करना चाहिए। भगवान का पूजन शास्त्र ज्ञाता ब्राह्मणों के द्वारा कराना चाहिए। तत्पश्चात भगवान विष्णु की स्तुति करनी चाहिए।

हे भगवान मैंने आपको शयन कराया है। आप के शयन से सम्पूर्ण विश्व सो जाता है। मेरी आप से

हाथ जोड़ कर विनय है कि आप जब चार मास तक शयन करें तो मेरे चातुर्मास्य व्रत को निर्विध्न पूरा करावें।

इस तरह विष्णु भगवान की स्तुति करके शुद्ध भाव से मनुष्य को दाँतुन आदि के नियमों को ग्रहण करना चाहिए। विष्णु भगवान के व्रत को शुरु करने के पाँच काल वर्णन किए हैं। देवशयनी एकादशी से लेकर देवोत्थानी एकादशी तक चातुर्मास्य व्रत को शुरू करना चाहिये। द्वादशी, पूर्णमासी, अष्टमी या सक्रांति को व्रत प्रारम्भ करना चाहिये और कार्तिक माह के शुक्लपक्ष की द्वादशी को समाप्त कर देना चाहिए। इसके व्रत से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य इस व्रत को प्रति वर्ष करते हैं वह सूर्य के समान देदीप्यमान, विमान पर बैठकर विष्णुलोक को जाते हैं। हे राजन्! अब आप इसका पृथक-पृथक फल सुनें।

जो मनुष्य देवमन्दिरों में रंगीन बेल बूटे बनाता है उसे सात जन्म तक ब्राह्मण की योनि मिलती है। जो मनुष्य चातुर्मास्य के दिनों में विष्णु भगवान को दही, दूध, घी, शहद और मिश्री के द्वारा स्नान कराता है वह वैभवशाली होकर सुख भोगता है। जो मनुष्य श्रद्धा पूर्वक भूमि, स्वर्ण, दक्षिणा आदि ब्राह्मणों को देता है स्वर्ग में जाकर इन्द्र के समान सुख भोगता है। जो विष्णु भगवान की स्वर्ण प्रतिमा बनाकर धूप, दीप, पुष्प, नैवेद्य आदि से भगवान की पूजा करता है वह इन्द्रलोक में जाकर अक्षय सुख भोगता है। जो मनुष्य चातुर्मास्य के अन्दर नित्य प्रति तुलसीजी भगवान को अर्पित करता है या स्वर्ण की तुलसी अर्पित करता है वह स्वर्ण के विमान पर बैठकर विष्णुलोक को जाता है। जो मनुष्य विष्णु भगवान की धूप दीप से पूजा करते हैं उनको अनन्त सम्पति मिलती है। जो मनुष्य इस एकादशी से कार्तिक के महीने तक अश्वत्थ वृक्ष और विष्णु की

पूजा करते हैं उनको विष्णुलोक की प्राप्ति होती है। इस चातुर्मास्य व्रत में जो मनुष्य संध्या के समय देवताओं तथा ब्राह्मणों को दीपदान करते हैं तथा ब्राह्मणों को सोने के कमल के वस्त्र देते हैं विष्णुलोक को जाते हैं। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक भगवान का चरणामृत लेते हैं वह इस संसार के आवागमन के चक्र से छूट जाते हैं। जो विष्णु मंदिर में नित्य प्रति एक सौ आठ बार गायत्री मंत्र का जप करते हैं वह पापों में लिप्त नहीं होते। जो मनुष्य पुराण तथा धर्मशास्त्र को सुनते हैं और वेदपाठी ब्राह्मणों को वस्त्रों तथा स्वर्ण सहित उनका दान करते हैं वे दानी धनी, ज्ञानी और कीर्तिमान होते हैं। जो मनुष्य विष्णु भगवान या शिवजी का स्मरण करते हैं और अन्त में उनकी प्रतिमा दान करते हैं वह सब पापों से रहित होकर गुणवान बनते हैं। जो मनुष्य सूर्यनारायण को अर्घ्य देते हैं और समाप्ति में स्वर्ण रक्त गौ-दान करते हैं उनको पूरी आयु की स्वस्थ देह प्राप्त होती

है तथा कीर्ति, धन और बल पाते हैं। चातुर्मास्य में जो मनुष्य गायत्री मन्त्र द्वारा तिल से होम करते हैं और चातुर्मास्य समाप्त हो जाने पर तिल का दान करते हैं उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और निरोग शरीर मिलता है तथा सुपात्र सन्तान होती है। जो मनुष्य चातुर्मास्य व्रत में अन्न से होम करते हैं और समाप्त हो जाने पर घी, घड़ा और वस्त्रों को दान करते हैं वह ऐश्वर्यशाली होते हैं तथा ब्रह्मा के समान भोग भोगते हैं। जो अश्वत्थ वृक्ष की पूजा करते हैं तथा अन्त में स्वर्ग सहित वस्त्रों का दान करते हैं उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

जो मनुष्य तुलसीजी को धारण करते हैं तथा अन्त में विष्णु भगवान के निमित्त ब्राह्मणों को दान करते हैं विष्णु लोक को जाते हैं। जो मनुष्य चातुर्मास्य व्रत में भगवान के शयन के उपरान्त उनके मस्तक पर नित्य प्रति दूध चढ़ाते हैं और अन्त में स्वर्ण की दुर्वादान करते हैं तथा दान देते समय जो इस प्रकार

स्तुति करते हैं कि दूर्बे! जिस भाँति इस पृथ्वी पर शाखाओं और छोटी शाखाओं सहित फैली हुई हो उसी प्रकार मुझे भी अजर, अमर सन्तान दो। ऐसा करने वाले मनुष्य के सब पाप छूट जाते हैं और अन्त में स्वर्ग को जाते हैं। जो शिवजी का विष्णु भगवान के देवालय में गान करते हैं उन्हें रात्रि जागरण का फल मिला है। जो मनुष्य चातुर्मास्य व्रत करते हैं उनको उत्तमध्वनि वाला घंटा दान करना चाहिए। घंटा दान करने के उपरान्त उसको भगवान की इस प्रकार स्तुति करनी चाहिए हे भगवान! हे जगत्पत्ति! आप पापों का नाश करने वाले हैं। आप मेरे करने योग्य कार्यों को न करने और न करने योग्य कार्यों को करने से जो पाप उत्पन्न हुए हैं उनको नष्ट कीजिये। चातुर्मास्य व्रत के अन्दर जो नित्य-प्रति ब्राह्मणों का चरणामृत पान करते हैं वे समस्त पापों तथा दुःखों से छूट जाते हैं और वे आयुवान लक्ष्मीवान होते हैं।

चातुर्मास्य व्रत के समाप्त हो जाने के बाद दो गौ दान करना चाहिये। यदि गौ-दान न कर सके तो वस्त्रदान अवश्य करना चाहिये। जो ब्राह्मण को नित्य-प्रति नमस्कार करते हैं उसका जीवन सफल हो जाता है और समस्त पापों से छूट जाते हैं चातुर्मास्य व्रत की समाप्ति में जो ब्राह्मणों को भोजन कराता है उसकी आयु तथा धन की वृद्धि होती है। जो मनुष्य अलंकार दक्षिणा को दान करते हैं वह चक्रवर्ती, आयुवान पुत्रदान राजा होते हैं और स्वर्ग लोकों में प्रलय के अन्त तक इन्द्र के समान राज्य करते हैं। जो मनुष्य सूर्य भगवान तथा गणेश जी को नित्य नमस्कार करते हैं। उनकी आयु तथा लक्ष्मी बढ़ती है और यदि गणेश जी प्रसन्न हो जायें तो मनवांछित फल पाते हैं गणेश जी और सूर्य की प्रतिमा ब्राह्मण को देने से सब काम की सिद्धि होती है। जो मनुष्य दोनों ऋतुओं में महादेवजी की प्रसन्नता के लिए रूपा दान करते हैं या जो प्रति दिन तिल और वस्त्रों

के साथ ताँबे का पात्र दान करते हैं उनके यहां स्वस्थ, सुन्दर शिव भक्त पुत्र-रत्न उत्पन्न होते हैं।

चातुर्मास्य व्रत की समाप्ति पर चांदी पात्र या तांबा पात्र गुड़ और तिल के साथ दान करना चाहिये। जो मनुष्य विष्णु भगवान के शयन करने के उपरान्त यथा शक्ति वस्त्र और तिल के साथ स्वर्ण दान करते हैं उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और इस लोक में भोग तथा परलोक में मोक्ष दोनों प्राप्त होते हैं। जो मनुष्य ब्राह्मणों की धूप पुष्प से पूजा करते हैं और अन्न वस्त्र दान देते हैं तथा चातुर्मास्य व्रत के समाप्त होने पर शैया दान करते हैं उनको अक्षय सुख मिलता है और कुबेर के समान धनवान होते हैं। वर्षा ऋतु में जो गोपीचन्दन देते हैं उस पर भगवान प्रसन्न होते हैं और इस लोक में भोग तथा परलोक में मुक्ति पाते हैं। चातुर्मास्य व्रत में भगवान के शयन करने पर गुड़ अथवा शक्कर का दान देते हैं और व्रत के समाप्त हो जाने पर इस प्रकार उद्यापन करते हैं चार

पल या आठ पल वाले तांबे के आठ पात्र या अड़तालीस पल का एक तांबे का पात्र लेकर उसमें शक्कर भरकर तथा वस्त्र, फल, दक्षिणा सहित ब्राह्मण को देना चाहिए। शक्कर सहित तांबे का पात्र सूर्य को प्रिय है। इससे मनुष्य के समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं। उसके दान के प्रभाव से बलवान कीर्तिवान सन्तान उत्पन्न होती है जो मनवांछित फल देने वाली है।

हे कुन्ती पुत्र! इस चातुर्मास्य व्रत को करने वाला मनुष्य गन्धर्व विद्या में निपुण और स्त्रियों को प्रिय होता है। जो मनुष्य चतुर्मास्य व्रत में ब्राह्मणों को शाक फल आदि देते हैं और अन्त में यथा शक्ति दान दक्षिणा वस्त्र आदि देते हैं वह सुखी राज योगी बनते हैं, शाक और फल से देवता प्रसन्न होते हैं। अतः उनके देनें से देवता प्रसन्न होते हैं। जो मनुष्य इस व्रत में प्रति दिन सोंठ, मिर्च, पीपर का वस्त्र और दक्षिणा के साथ दान करते हैं और व्रत के अन्त

में स्वर्ण की सोंठ मिर्च आदि दान देते हैं वे सौ वर्ष तक जीते हैं और अन्त में स्वर्ग को जाते हैं। जो मनुष्य बुद्धिमान ब्राह्मण को मोती दान करता है वह कीर्ति को प्राप्त करता है। जो मनुष्य इस व्रत में तम्बाकू का दान करते हैं तो तम्बाकू खाना छोड़ देते हैं और अन्त में लाल वस्त्र ब्राह्मण को दान करते हैं वह अगले जन्म में सौन्दर्यशाली बनते हैं और निरोगी, बुद्धिमान, भाग्यवान तथा सुन्दर वाणी वाले होते हैं, तम्बाकू के दान से इस लोक में गन्धर्व विद्या में निपुण और परलोक में स्वर्ग मिलता है। तम्बाकू लक्ष्मी और मंगल प्रदान करती है। इसके दान से देवता प्रसन्न होते हैं और अनन्त धन देते हैं। इस व्रत में जो मनुष्य लक्ष्मी या पार्वती को प्रसन्न करने के लिए हल्दी का दान करते हैं और अन्त में चांदी के पात्र में हल्दी रखकर दान देते हैं वे स्त्रियां अपने पति के साथ और पति अपनी स्त्री के साथ सुख भोगते हैं। इससे इन्हें सौभाग्य अक्षय धन तथा सुपात्र

संतान मिलती है और उनकी देवलोक में पूजा होती है। इस व्रत में जो मनुष्य शिवजी और पार्वती जी की प्रसन्नता के लिए ब्राह्मण स्त्री पुरुषों की पूजा करते हैं तथा दक्षिणा वस्त्र स्वर्ण आदि दान करते हैं और व्रत के शुरू में शिव जी की स्वर्ण की प्रतिमा दान देते हैं। गौ और बैल दान व ब्राह्मणों को मीठा भोजन कराते हैं उन्हें सम्पत्ति और कीर्त्ति मिलती है और इस लोक में सुख भोग कर अन्त में शिव लोक को जाते हैं। जो मनुष्य फल का दान करता है और व्रत के अन्त में स्वर्ण दान करता है उसके सब मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं। सुपात्र सन्तान पैदा होती है फलदान से इन्हें नन्दवन का सुख प्राप्त होता है। जो मनुष्य उस व्रत में पुष्पदान करते हैं उन्हें इस लोक में सुख मिलता है और परलोक में गन्धर्व पद मिलता है। इसमें वामन भगवान की प्रसन्नता के लिए ब्राह्मणों को दही युक्त भात खिलाना चाहिए। यदि यह नित्य न हो सके तो आठों, अमावस्या पूर्णमासी

और प्रत्येक रविवार या शुक्रवार को खिलाना चाहिए। इस व्रत की समाप्ति में भूमिदान न हो सके तो वस्त्र और स्वर्ण से युक्त पादुका दान करना चाहिए। ऐसा करने से इस लोक में धन धान्य, पुत्र तथा विष्णु भक्ति मिलती है और अन्त में विष्णु लोक को जाते हैं। जो मनुष्य दान तथा आभूषण से युक्त बछड़ा सहित गौ का दान करते हैं वह इस लोक में ज्ञानी और किसी के सेवक नहीं बनते और अन्त में ब्रह्मलोक में जा कर पितरों के साथ अनन्त सुख प्राप्त करते हैं।

चातुर्मास्य व्रत में जो मनुष्य प्रजापत्य व्रत करते हैं और इसके समाप्ति में गौ दान करते हैं और ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं वह समस्त पापों से छूटकर ब्रह्म लोक को जाते हैं। इस व्रत में जो एक दिन छोड़कर वस्त्र और बैलों के साथ आठ हल दान करते हैं और शाक, मूल, फल आहार करते हैं वह विष्णुलोक को जाते हैं। जो मनुष्य पयोव्रत करते हैं

और अन्त में दूध वाली गौ देते हैं वह विष्णु लोक
को जाते हैं। जो मनुष्य दोनों ऋतुओं में केला पत्र
और पलासके पत्रों में भोजन करते हैं। तथा कांसे
के पात्र और वस्त्रदान करते हैं वे लोक में सुख पाते
हैं इस व्रत में जो पलास पत्र पर भोजन करते हैं तथा
तेल नहीं खाते हैं उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं
चातुर्मास्य व्रत के प्रभाव से ब्राह्मण घात करने वाला
सुरा पीने वाला, बालकों को मारने वाला, असत्य
भाषण करने वाला, स्त्री को मारने वाला, किसी के
व्रत को बिगाड़ने वाला, अगम्या गमन करने वाला
विधवा गमन करने वाला, ब्राह्मणी तथा चाण्डालनी
से गमन करने वाला, इन सबके पाप नष्ट हो जाते हैं
और अन्त में निर्वाण पद को पाते हैं।

चातुर्मास्य व्रत के अन्त में चौंसठ पल कांसे का
पात्र तथा आभूषणों युक्त बछड़ा सहित गौ का दान
करना चाहिये। जो मनुष्य भूमि को लीप कर भगवान
का स्मरण करके भोजन करते हैं उन्हें आरोग्यता

तथा पुत्र की प्राप्ति होती है। वह धार्मिक तथा चक्रवर्ती राजा होते हैं। उन्हें किसी शत्रु का भय नहीं रहता और अन्त में वह स्वर्ग को जाते हैं। जो मनुष्य बिना मांगे हुए आभूषणों से युक्त चंदन सहित बैल दान करते हैं तथा उसे षठरस चंदन सहित बैल दान करते हैं तथा उसे षठरस युक्त भोजन कराते हैं उन्हें विष्णुलोक प्राप्त होता है जो मनुष्य भगवान के शयन् करने पर नित्य-प्रति रात्रि को जागरण करते हैं तथा अन्त में ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं उन्हें शिवलोक की प्राप्ति होती है। चातुर्मास्य व्रत में जो मनुष्य नित्य-प्रति एक समय खाकर ही रहता है तथा अन्त में भूखे को भोजन कराते हैं उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक भगवान की पूजा करता है वह विष्णु लोक को जाता है। जो भगवान के शयन करने के बाद भूमि पर सोता है तथा अन्त में शैयादान करता है उनकी शिवलोक में पूजा होती है। चातुर्मास्य व्रत में जो मनुष्य मैथुन नहीं करता

वह बलशाली, यशस्वी और लक्ष्मीवान होता है तथा अन्त में स्वर्गलोक को जाता है जो मनुष्य इस व्रत में उत्तम चावल या जौ सपरिवार खाता है वह स्वर्ग को जाता है। चातुर्मास्य व्रत में जो तेल नहीं लगाता तथा अन्त में कांसे या मिट्टी के पात्र में तेल भरकर दान देता है वह विष्णु लोक को जाता है। जो इस व्रत में शाक नहीं खाता और अन्त में चांदी के पात्र को वस्त्र लपेटकर दान देता है वह शिव लोक में जाकर ख्याति प्राप्त करता है। जो मनुष्य इस व्रत में गेहूं को त्यागकर भोजन करते हैं तथा सुवर्ण का गेहूं दान करते हैं उन्हें अश्वमेघ यज्ञ के फल की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य इस व्रत में अपनी इन्द्रियों का दमन करता है उसे अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है। जो मनुष्य श्रावण में शाक, भादो में दही, क्वार में दूध और कार्तिक में दाल को त्याग देते हैं उन्हें निरोगी काया प्राप्त होती है। जो स्नान करके भगवान की पूजा करते हैं वह स्वर्ग को जाते हैं! जो मनुष्य

इस व्रत में मीठा, खट्टा, कड़ुआ पदार्थ को त्याग देता है वह समस्त दुर्गुणों से छूट स्वर्ग को जाता है। जो मनुष्य भगवान को स्मरण करते हैं। उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य इस व्रत में पुष्प आदि का धारण काल छोड़ देते हैं वह स्वर्गलोक को जाते हैं। इस व्रत में जो मनुष्य चन्द्रायण का व्रत करते हैं वह स्वर्गलोक को जाते हैं जो मनुष्य इस व्रत में एक मात्र दूध पर ही जीवन निर्वाह करते हैं उनका वंश प्रलय के अंत तक चलता है। जिस दिन भगवान शयन करते हैं उस दिन ब्राह्मणों को दान वस्त्र तथा भोजन कराना चाहिए। यह समस्त दान वेदपाठी धःर्मिक ब्राह्मण को देना चाहिए। चोरी करने वाला, मद्यपान करने वाला अगम्या गमन करने वाला अधर्मी, शास्त्रों का निरादर करने वाला, मिथ्या बोलने वाला, अन्य त्याज्य कर्म करने वाले ब्राह्मण को दान देने से उल्टा पाप लगता है तथा नर्क की प्राप्ति होती है।

॥ अथ कामदा एकादशी माहात्म्य ॥

कुन्ती पुत्र धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे भगवान अब आप मुझे श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी की सविस्तार कथा सुनाइए। उस एकादशी का नाम तथा उसकी विधि क्या है। उस में कौन से देवता की पूजा होती है।

श्रीकृष्ण भगवान बोले-हे राजन! मैं एकादशी की कथा कहता हूँ, ध्यान पूर्वक सुनो। एक समय इस एकादशी की पावन कथा को भीष्म पितामह ने लोक हित के लिए नारदजी से कहा था। एक समय नारद जी ने पूछा कि पितामह! आज मेरी श्रावण माह के कृष्णपक्ष की एकादशी की कथा सुनने की इच्छा है। अतः अब आप एकादशी की व्रत कथा विधि सहित सुनाइये। भीष्म पितामह नारदजी के वचनों को सुनकर बोले-हे नारद जी आपने मुझसे यह अत्यन्त सुन्दर प्रश्न किया है अब आप ध्यान लगाकर सुनिये।

श्रावण माह के कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम कामदा है। इस एकादशी की कथा के सुनने मात्र से ही बाजपेय यज्ञ का फल मिलता है। कामदा एकादशी के व्रत में शंख, चक्र, गदाधारी विष्णु भगवान की पूजा की जाती है। जो मनुष्य इस एकादशी को धूप, दीप, नैवेद्य आदि से भगवान विष्णु की पूजा करते हैं उन्हें गंगा स्नान के फल से भी बड़ा फल मिलता है। यही फल सूर्य, चन्द्र ग्रहण, केदार और कुरुक्षेत्र में स्नान करने से मिलता है। श्रीविष्णु भगवान के पूजन का फल समुद्र और बन सहित पृथ्वी दान करने और सिंह राशि वालों को गोदावरी नदी में स्नान के फल से भी अधिक होता है। व्यतीपात में गण्डक नदी में स्नान करने से जो फल मिलता है। वह फल भगवान की पूजा करने से मिल जाता है। भगवान की पूजा का फल श्रावण मास के कृष्णपक्ष की एकादशी के फल के बराबर है। अतः भक्तिपूर्वक भगवान की पूजा न बन सके

तो श्रावण माह के कृष्णपक्ष की कामदा एकादशी का व्रत अवश्य करना चाहिए। आभूषण से युक्त बछड़ा सहित गौ दान करने से जो फल मिलता है, वह फल कामदा एकादशी के व्रत से मिल जाता है।

जो उत्तम द्विज श्रावण माह के कृष्ण पक्ष की कामिदा एकादशी का व्रत करते हैं तथा श्री विष्णु भगवान की पूजा करते हैं उससे समस्त वेद, नाग, किन्नर पितृ आदि की पूजा हो जाती है। हे नारद स्वयं भगवान ने अपने मुख से कहा है कि मनुष्यों को अध्यात्म विद्या से जो फल मिलता है उसका अधिक फल कामिदा एकादशी का व्रत करने से मिल जाता है। इस व्रत के करने से मनुष्य अन्तिम समय अनेक दुःखों से युक्त यमराज तथा नर्क के दर्शन नहीं करता। कामिदा एकादशी के व्रत तथा रात्रि के जागरण से मनुष्य को कुयोनि नहीं मिलती और अन्त में स्वर्गलोक को जाता है।

जो उत्तम मनुष्य श्रावण माह के कृष्ण पक्ष की

कामिदा एकादशी को तुलसी से भक्ति पूर्वक श्री विष्णु भगवान की पूजा करते हैं वे इस संसार सागर में रहते हुए भी इससे इस प्रकार अलग रहते हैं जिस प्रकार कमल जल में रहता हुआ भी जल से अलग रहता है। भगवान की तुलसी दल से पूजा करने का फल एक भार स्वर्ग और चार भार चाँदी के दान के फल के बराबर है। श्री विष्णु भगवान रत्न, मोती, मणि, आभूषण आदि की अपेक्षा तुलसी दल से अधिक प्रसन्न होते हैं। जो मनुष्य भगवान की तुलसीदल से पूजा करते हैं उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

हे नारद! मैं स्वयं भगवान की अत्यन्त प्रिय श्री तुलसीजी को नमस्कार करता हूँ। तुलसीजी के दर्शन मात्र से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और शरीर के स्पर्श मात्र से मनुष्य पवित्र हो जाता है। तुलसीजी को जल से स्नान कराने से मनुष्य की समस्त यमयातनायें नष्ट हो जाती हैं। जो मनुष्य तुलसी

जी को भक्ति पूर्वक भगवान के चरण कमलों में अर्पित करता है उसे मुक्ति मिलती है।

जो मनुष्य एकादशी के दिन भगवान के सामने दीप जलाते हैं उनके पितृ स्वर्गलोक में सुधा का पान करते हैं। जो मनुष्य भगवान के सामने घी या तिल के तेल का दीपक जलाते हैं उनको सूर्य लोक में भी सहस्त्रों दीपकों का प्रकाश मिलता है। इस व्रत के करने से ब्रह्म हत्या, ब्राह्मण-हत्या आदि सभी के पाप नष्ट हो जाते हैं और इस लोक में सुख भोगकर अन्त में विष्णुलोक को जाते हैं। इस कामिदा एकादशी के माहात्म्य के श्रवण व पठन से मनुष्य स्वर्गलोक को जाते हैं।

॥ अथ पुत्रदा एकादशी माहात्म्य ॥

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि-हे भगवान! अब आप मुझे श्रावण माह के शुक्लपक्ष की एकादशी की कथा सुनाइये! इस एकादशी का नाम तथा इस की विधि क्या है? सो सब कहिये।

श्री मधुसूदन बोले कि–हे राजन्! अब आप शाँति पूर्वक श्रावण माह के शुक्लपक्ष की एकादशी की कथा सुनिये। इस कथा के श्रवण मात्र से ही वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है। द्वापर युग के प्रारम्भ में महिष्मती नाम की नगरी में महीजित नाम का एक राजा पुत्र हीन था। वह सदैव चिन्ता ग्रस्त रहता था। उसे वह राज्य दुःखदायी प्रतीत होता था क्योंकि पुत्र बिना इस लोक और परलोक दोनों में सुख नहीं है। राजा ने पुत्र की प्राप्ति के बहुत यत्न किये परन्तु वह निष्फल गए। जब वह राजा वृद्ध होने लगा तो उसकी चिंता भी बढ़नी लगी। एक दिन उस राजा ने प्रजा को संबोधन करके कहा कि न तो मैंने अपने जीवन में पाप किया और न अन्याय पूर्वक प्रजा से धन एकत्र किया है। न मैंने कभी देवता और ब्राह्मणों का धन छीना है और न किसी की धरोहर ली है। मैंने प्रजा को सदैव पुत्र की तरह पाला है। मैंने अपराधियों को पुत्र और बांधवों की तरह दंड दिये

हैं। मैंने कभी किसी से रागद्वेष नहीं किया, सबको समान माना है। इस प्रकार धर्मयुक्त राज्य करने पर भी मैं इस समय महा दुःख पा रहा हूँ सो क्या कारण है? मेरी कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है।

राजा महीजित की इस बात को विचारने के लिये मन्त्रिगण आदि वन को गये। वहाँ वन में जाकर उन्होंने बड़े-बड़े मुनियों के दर्शन किये। उस स्थान पर वयोवृद्ध और धर्म के ज्ञाता महर्षि लोमश के पास गये। उन सबने जाकर महर्षि को यथा योग्य प्रणाम किया और उनके सम्मुख बैठ गये। उनसे विनय करने लगे कि हे देव! हमारे अहोभाग्य हैं। कि हमें आपके दर्शन हुए। इस पर लोमश ऋषि बोले कि ब्राह्मणों! आप लोगों की विनय तथा आप के सद्व्यवहार से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं। अब आप मुझे अपने आने का कारण बतलाइये। मैं आपके कार्य को अपनी शक्ति के अनुसार अवश्य ही पूरा करूंगा क्योंकि हमारा शरीर ही परोपकार के लिए

बना है। इसमें किंचित् मात्र भी सन्देह नहीं है। लोमश ऋषि के ऐसे वचन सुनकर सब बोले कि हे महर्षि। आप हमारी समस्त बातों को जानने को ब्रह्मा से भी अधिक हैं। महिष्मती नाम की पुरी में एक महाजित नाम का एक धर्मात्मा राजा है। वह प्रजा का पुत्र की तरह धर्मानुसार पालन करता है परन्तु फिर भी पुत्रहीन है। इससे वह अत्यन्त दुःखी रहता है। हम लोग उस राजा की प्रजा हैं! क्योंकि प्रजा का यह कर्तव्य है कि राजा के सुख में सुख माने और उसके दुःख में दुःख माने। हमको उसके पुत्रहीन होने का अभी तक कारण प्रतीत नहीं हुआ! अब जब से आपके दर्शन करे हैं हम को पूर्ण रूप से विश्वास है कि हमारा कष्ट अब अवश्य ही दूर हो जाएगा। अतः अब आप हमको राजा के पुत्र होने का उपाय बताइये।

इस पर लोमश ऋषि ने एक क्षण के लिए नेत्र बन्द किये और राजा के पूर्व जन्मों का विचार करने

लगे। विचार करके बोले कि हे ब्राह्मणों! यही राजा पिछले जन्म में अत्यन्त निर्धन था तथा बुरे कर्म किया करता था। एक गांव से दूसरे गांव को घूमा करता। एक दिन ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी के दिन जो कि दो दिन से भूखा था दोपहर के समय एक जलाशय पर पानी पीने गया। उसी समय की ब्याही हुई प्यासी गौ जल पी रही थी। राजा ने उसको प्यासी हीं हटा दिया और स्वयं जल पीने लगा। हे ब्राह्मणों! इस लिये राजा को यह दुःख भोगने पड़ रहे हैं। एकादशी के दिन भूखा रहने से उसको राजा होना पड़ा और प्यासी गौ को हटाने से पुत्र के वियोग का दुःख भोगना पड़ा।

इस पर सब लोग बोले कि-हे महर्षि शास्त्र में ऐसा लिखा है कि पुण्य से पाप नष्ट हो जाते हैं। इसलिये कृपा करके आप राजा के पूर्व जन्म के पाप नष्ट होने का उपाय बतल इये क्योंकि इस पाप के क्षय होने से पुत्ररत्न की उत्पत्ति होगी! ब्राह्मणो

के ऐसे वचनों को सुनकर लोमश ऋषि बोले कि हे ब्राह्मणो! यदि श्रावण माह की शुक्लपक्ष की पुत्रदा एकादशी को तुम सब लोग व्रत करो और रात्रि को जागरण करो और उस व्रत का फल राजा को प्रदान कर दो तो तुम्हारे राजा को पुत्र रत्न पैदा होगा।

मन्त्रियों सहित समस्त प्रजा महर्षि लोमश ऋषि के वाक्यों को सुनकर प्रसन्नता पूर्वक अपने नगर को वापिस आई। उन सब लोगों ने श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पुत्रदा एकादशी को लोमश ऋषि की आज्ञानुसार विधि पूर्वक व्रत किया और द्वादशी को उसका फल राजा को दिया। उस पुण्य के प्रभाव से रानी ने गर्भ धारण किया और नौ महीने पश्चात् उसके एक अत्यन्त तेजस्वी पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ।

हे राजन् इसलिए इस एकादशी का नाम पुत्रदा पड़ा। जो मनुष्य पुत्र रत्न को प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें इस एकादशी का विधि पूर्वक व्रत करना चाहिए। इस व्रत के प्रभाव से इस लोक में सुख और परलोक में स्वर्ग मिलता है।

॥ अथं अजा एकादशी माहात्म्य ॥

कुन्ती पुत्र युधिष्ठिर बोले कि हे जनार्दन! अ
आप मुझे भादों की कृष्णपक्ष की एकादशी के बा
में बतलाइये। उस एकादशी का नाम तथा विधि
क्या है सो विस्तार पूर्वक कहिये।

श्री कृष्ण भगवान बोले कि हे राजर्षि! भाद
की कृष्णपक्ष की एकादशी को अजा कहते हैं ज
मनुष्य इस दिन भगवान की भक्ति पूर्वक पूजा कर
हैं तथा व्रत करते हैं उनके समस्त पाप नष्ट हो जा
हैं। इस लोक और परलोक में सहाय करने वाल
इस एकादशी व्रत के समान विश्व में दूसरी एकादश
नहीं है। इस एकादशी की कथा इस प्रकार है।

प्राचीन काल में एक चक्रवर्ती राजा हरिश्च
राज्य करता था। वह अत्यन्त वीर, प्रतापी त
सत्यवादी था। उसने किसी अज्ञात कर्म तथा प्रति
से राज्य को त्याग दिया और अपनी स्त्री तथा पु
को बेच डाला। वह स्वयं एक चाँडाल का सेव

न गया था। उसने इस चाँडाल के यहां कफन लेने का काम किया। परन्तु उसने इस आपत्ति के काम में सत्य को न छोड़ा। जब इस प्रकार रहते हुए उनको बहुत वर्ष हो गये तो उसे अपने इस नीच कर्म पर बड़ा दुःख हुआ और इससे मुक्त होने का उपाय खोजने लगा। वह उस जगह सदैव इसी चिंता में लगा रहता कि मैं क्या करूँ।

एक समय जब कि वह चिंता कर रहा था गौतम ऋषि आये। राजा ने उन्हें देखकर प्रणाम किया और अपने दुःख की कथा सुनाने लगे। महर्षि गौतम राजा के दुःख से पूर्ण वाक्यों को सुनकर अत्यन्त दुखी हुए और राजा से बोले कि हे राजन्! भादों के कृष्णपक्ष से अजा एकादशी होती है। एकादशी का विधि पूर्वक व्रत करो तथा रात्रि जागरण करो। इससे तुम्हारे समस्त पाप नष्ट हो जावेंगे। गौतम ऋषि राजा से इस प्रकार कह कर अन्तर्ध्यान हो गये।

हे राजन! यह सब अजा एकादशी के व्रत का

प्रभाव था। जो मनुष्य इस व्रत को विधि पूर्वक करते हैं तथा रात्रि जागरण करते हैं उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त समय स्वर्ग को जाते हैं। इस एकादशी की कथा के श्रवण मात्र से ही अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है।

॥ अथ वामन (परिवर्तिनी) एकादशी माहात्म्य ॥

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे भगवान्! भादों की शुक्लपक्ष की एकादशी का नाम तथा विधि क्या है। उस एकादशी के व्रत को करने से कौन सा फल मिलता है तथा उसका उपदेश कौन सा है? सो सब कहिए।

श्रीकृष्ण भगवान बोले कि हे राजश्रेष्ठ! अब मैं अनेक पाप नष्ट करने वाली तथा अन्त में स्वर्ग देने वाली भादों की शुक्लपक्ष की वामन नाम की एकादशी की कथा कहता हूँ। इस एकादशी को जयन्ती एकादशी भी कहते हैं। इस एकादशी की

कथा के सुनने मात्र से ही समस्त पापों का नाश हो जाता है। इस एकादशी के व्रत का फल वाजपेय यज्ञ के फल से भी अधिक है। इस जयंती एकादशी की कथा से नीच पापियों का उद्धार हो जाता है। यदि कोई धर्म परायण मनुष्य एकादशी के दिन मेरी पूजा करता है तो मैं उसे संसार की पूजा का फल देता हूँ। जो मनुष्य मेरी पूजा करता है उसे मेरे लोक की प्राप्ति होती है। इस में किंचित मात्र भी संदेह नहीं। जो मनुष्य इस एकादशी के दिन श्री वामन भगवान की पूजा करता है वह तीनों देवता अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, महेश की पूजा करता है। जो मनुष्य इस एकादशी का व्रत करते हैं उन्हें इस संसार में कुछ भी करना शेष नहीं रहता।

एकादशी के दिन श्री विष्णु भगवान करवट बदलते हैं इसलिए इसे परिवर्तनी एकादशी भी कहते हैं इस पर श्री युधिष्ठिर बोले कि हे भगवान! आपके वचनों को सुनकर मुझे महान सन्देह हो रहा है कि आप किस प्रकार सोते तथा करवट बदलते हैं। आप

ने बलि को क्यों बांधा और वामन रूप धारण करके क्या लीलायें की? चातुर्मास्य व्रत की विधि क्या है तथा आपके शयन करने पर मनुष्य का क्या कर्त्तव्य है सो सब विस्तार पूर्वक कहिये। श्री कृष्ण भगवान बोले कि हे राजन्! अब आप पापों को नष्ट करने वाली कथा का श्रवण करो।

त्रेता युग में एक बलिनाम का दानव था। वह अत्यंत भक्त, दानी, सत्यवादी तथा ब्राह्मणों की सेवा करता था। वह अपनी भक्ति के प्रभाव से स्वर्ग में इंद्र के स्थान पर राज्य करने लगा। इंद्र तथा अन्य देवता इस बात को सहन न कर सके और भगवान के पास प्रार्थना करने लगे। अंत में भगवान ने वामन रूप धारण किया। मैंने अत्यन्त तेजस्वी ब्राह्मण बालक के रूप में राजा बलि को जीता।

इस पर युधिष्ठिर बोले कि हे जनार्दन आपने वामन रूप धारण करके बलि को किस प्रकार जीता सो सब सविस्तार समझाइए। श्री कृष्ण भगवान् बोले कि हे राजन! मैंने वामन का रूप धारण करके

राजा बलि से याचना की कि हे राजन् तुम तीन पैर भूमि दे दो इससे तुम्हारे लिए तीन लोक दान का फल प्राप्त होगा। राजा बलि ने इस छोटी सी याचना को स्वीकार कर लिया और भूमि देने को तैयार हो गया। तब मैंने अपने आकार को बढ़ाया और भूलोक में पैर, भुवलोक में जंघा, स्वर्गलोक में कमर, महलोक में पेट, जनलोक में हृदय, तपलोक में कंठ और सत्यलोक में मुख रखकर अपने शिर को ऊँचा उठा लिया। उस समय सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, इन्द्र तथा अन्य देवता आदि शास्त्रानुसार मेरी स्तुति करने लगे। उस समय राजा बलि को पकड़ा और पूछा कि हे राजन। अब मैं तीसरा पैर कहां रक्खूं। इतना सुनकर राजा बलि ने अपना शिर नीचा कर लिया उस पर मैंने अपना तीसरा पैर रख दिया। और वह भक्त दानव पाताल को चला गया जब मैंने उसे अत्यन्त विनीत पाया तो मैंने उससे कहा कि हे बलि मैं सदैव तुम्हारे पास ही रहूँगा! भादों के शुक्लपक्ष की एकादशी को परिवर्तिनी नामक एकादशी के दिन

मेरी एक प्रतिमा राजा बलि के पास रहती है और एक क्षीर सागर में शेषनाग पर शयन करती रहती है। इस एकादशी को विष्णु भगवान सोते हुए करवट बदलते हैं। इस दिन त्रिलोकी के नाथ श्री विष्णु भगवान की पूजा की जाती है। इस में चावल और दही सहित रूपा का दान दिया जाता है। इस दिन रात्रि को जागरण करना चाहिए। इस प्रकार व्रत करने से मनुष्य समस्त पापों से मुक्त होकर स्वर्गलोक को जाता है। जो इन पापों को नष्ट करने वाली कथा को सुनते हैं, उन्हें अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है।

॥ अथ इन्दिरा एकादशी माहात्म्य ॥

युधिष्ठिर बोले-हे भगवान! अब आप कृपा पूर्वक-आश्विन मास की कृष्णपक्ष की एकादशी की कथा को कहिये! इस एकादशी का नाम क्या है तथा इस एकादशी के व्रत करने से कौन-कौन फल मिलते

हैं। सो सब समझाकर कहिये। इस पर श्री कृष्ण भगवान बोले कि हे राजश्रेष्ठ! आश्विन मास की कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम इन्दिरा है। इस एकादशी के व्रत करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। तथा नरक में गए हुए पितरों का उद्धार हो जाता है। हे राजन! इस एकादशी की कथा के सुनने मात्र से ही वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है।

प्राचीन सतयुग में महिष्मति नाम की नगरी में इन्द्रसेन नाम का प्रनापी राजा राज्य करता था। एक समय जबकि राजा अपनी राज-सभा में सुख पूर्वक बैठा था। महर्षि नारद आकाश मार्ग से उतर कर वहाँ आये। महर्षि नारद बोले कि हे राजन्! आपके राज्य में सब कुशल है। मैं आपकी धर्म परायणता देखकर अत्यन्त प्रसन्न हूं। तब राजा बोला हे महर्षि आपकी कृपा से मेरे राज्य में सब कुशल पूर्वक हैं।

इस पर नारदजी बोले कि हे राजन! मुझे एक महान आश्चर्य हो रहा है कि एक समय जब मैं ब्रह्मलोक से यमलोक को गया था तो उस जगह

यमराज की सभा के मध्य में मैंने तुम्हारे पिताजी को बैठा देखा था। तुम्हारा पिता महान ज्ञानी, दानी तथा धर्मात्मा था। वह एकादशी के व्रत बिगड़ जाने से यमलोक को गया है। तुम्हारे पिता ने मुझ से तुम्हारे लिए एक समाचार भेजा है कि यदि मेरा पुत्र इन्द्रसेन आश्विन मास के कृष्णपक्ष की इंदिरा एकादशी का व्रत करे और उस व्रत का फल मुझे दे दे तो मेरी मुक्ति हो जाय। इस लोक से छूटकर मैं स्वर्गलोक में वास करूँ।

जब राजा ने महर्षि नारद जी से ऐसे वाक्यों को सुना तो उसे महान दुःख हुआ और इन्दिरा एकादशी के व्रत की विधि पूछने लगा कि हे नारद अब आप मुझे इस एकादशी के व्रत की विधि बतलाइये। इस पर नारदजी बोले कि हे राजन आश्विन मास की कृष्ण पक्ष की दशमी के दिन प्रातःकाल श्रद्धा सहित स्नान करना चाहिए। इसके पश्चात दोपहर को भी स्नान करना चाहिए। उस समय जल से निकलकर

श्रद्धा पूर्वक पितरों का श्राद्ध करे ओर उस दिन एक समय भोजन करे और रात्रि को पृथ्वी पर शयन करे। इससे दूसरे दिन अर्थात एकादशी के दिन प्रातः काल दाँतुन करे और स्नान करे। उसके पश्चात भक्तिपूर्वक व्रत को धारण करे और कहना चाहिए कि मैं आज निराहार रहूँगा और समस्त भोगों को त्याग दूँगा। इसके पश्चात कल भोजन करूँगा। हे भगवान। आप मेरी रक्षा करने वाले हैं। आप मेरे व्रत को निभाइये। इस प्रकार आचरण करके दोपहर को सालिगराम की मूर्ति का भोग लगावे। भोजन में से कुछ हिस्से को गौ को दे और विष्णु भगवान की धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजा करे और रात्रि को जागरण करे। इसके उपरान्त द्वादशी के दिन मौन होकर बन्धु-बान्धवों सहित भोजन करे। हे राजन! यही इन्दिरा एकादशी के व्रत की विधि है।

हे राजन! यदि तुम आलस्य रहित होकर इस एकादशी के व्रत को करोगे तो तुम्हारे पिताजी अवश्य ही स्वर्ग को जायेंगे। महर्षि नारद राजा को जब

उपदेश देकर अन्तर्ध्यान हो गये तो राजा ने इन्द्रा एकादशी के आने पर उसका विधिपूर्वक व्रत किया। बन्धु-बांधव सहित इस व्रत के करने से आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई और राजा का पिता यमलोक से गरुड़ पर चढ़कर स्वर्ग को गया। राजा इन्द्रसेन भी एकादशी के व्रत के प्रभाव से इस लोक में सुख भोगकर अन्त में स्वर्गलोक को गया।

श्रीकृष्ण भगवान कहने लगे-कि हे धर्मराज युधिष्ठिर! यह मैंने तुम्हारे सामने इन्द्रा एकादशी का माहात्म्य वर्णन किया। इस कथा के पढ़ने व सुनने मात्र से ही समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में स्वर्गलोक में जाकर वास करता है।

॥ अथ पाशांकुशा एकादशी माहात्म्य ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे भगवान! आश्विन मास की शुक्लपक्ष की एकादशी का क्या नाम है तथा उस व्रत के करने से कौन-कौन से फल मिलते हैं

सो सब कहिये। उस पर श्रीकृष्ण भगवान बोले कि हे राजन! आश्विनमास की शुक्लपक्ष की एकादशी का नाम पाशांकुशा है। इसके व्रत करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

इस एकादशी के दिन मनवांछित फल की प्राप्ति के लिए श्रीविष्णु भगवान की पूजा करनी चाहिए। जो मनुष्य कठिन तपस्याओं के द्वारा फल प्राप्त करते हैं वह फल इस एकादशी के दिन क्षीर-सागर में शेषनांग पर शयन करने वाले विष्णु भगवान को नमस्कार कर देने से मिल जाता है। जो मनुष्य शंख चक्रधारी विष्णु भगवान की शरण में जाता है उसे यम यातना नहीं मिलती।

जो पापी मनुष्य अनायास इस एकादशी का व्रत करते हैं उन्हें यम के दुःख नहीं मिलते। जो विष्णु भक्त शिवजी की निन्दा करते हैं अथवा जो शिव भक्त विष्णु भगवान की निन्दा करता है वे दोनों नरक को जाते हैं। एक हजार अश्वमेघ यज्ञ और सौ राजसूय यज्ञ का फल इस एकादशी के व्रत के फल

के सोहलवें हिस्से के बराबर भी नहीं होता है। अर्थात एकादशी व्रत के समान संसार में अन्य दूसरा व्रत नहीं है। एकादशी के समान विश्व में ऐसी पवित्र तिथि नहीं है।

इस एकादशी के व्रत से मनुष्य को स्वस्थ शरीर और सुन्दर स्त्री तथा धन-धान्य मिलता है तथा अन्त में स्वर्ग की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य इस एकादशी के व्रत में रात्रि को जागरण करते हैं उन्हें बिना किसी रोक के स्वर्ग मिलता है। जो मनुष्य इस एकादशी का व्रत करते हैं उनके मातृ पक्ष के दस पुरुष पितृ पक्ष के दस पुरुष और स्त्री पक्ष के दस पुरुष विष्णु का वेष धारण करके तथा सुन्दर आभूषणों से युक्त होकर गरुड़ पर सवार होकर विष्णु लोक को जाते हैं।

जो मनुष्य एकादशी के दिन भूमि, गौ, अन्न, जल, उपानह, वस्त्र छत्र आदि का दान करते हैं उन्हें यमराज के दर्शन नहीं मिलते हैं। दरिद्री मनुष्यों को भी यथा शक्ति कुछ दान देकर कुछ पुण्य अवश्य

ही पैदा करना चाहिये। जो मनुष्य तालाब, बगीचा, धर्मशाला, प्याऊ, अन्न क्षेत्र आदि बनवाते हैं उन्हें यम के दुख नहीं मिलते। वह मनुष्य इस लोक में स्वस्थ दीर्घायु वाले तथा धन-धान्य से पूर्ण होकर सुख भोगते हैं तथा अन्त में स्वर्गलोक को जाते हैं।

हे राजन! इन सबका सारांश यह है कि जो मनुष्य धर्म करते हैं उन्हें सुख मिलता है और जो अधर्मी हैं, उन्हें दुर्गति भोगनी पड़ती है।

॥ अथ रमा एकादशी माहात्म्य ॥

धर्मराज युधिष्ठिर बोले-हे भगवान! अब आप मुझे कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की एकादशी की कथा सुनाइये। इस एकादशी का नाम क्या है तथा इससे कौन सा फल मिलता है? श्रीकृष्ण भगवान बोले कि राजराजेश्वर! कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम रमा है। इसके व्रत से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। इसकी कथा इस प्रकार है-

प्राचीनकाल में मुचुकुन्द नाम का एक राजा राज्य करता था। उसके इन्द्र वरुण कुबेर विभीषण आदि मित्र थे। वह सत्यवादी तथा विष्णु भक्त था। उसके एक उत्तम चन्द्रभागा नाम की लड़की उत्पन्न हुई। उसने उस लड़की का विवाह राजा चन्द्रसेन के पुत्र सोभन के साथ किया। एक समय जब कि वह अपनी ससुराल में थी, एक एकादशी पड़ी। चन्द्रभागा सोचने लगी कि अब एकादशी समीप आ गई है। परन्तु मेरा पति अत्यन्त कमजोर है इसलिये वह यह व्रत नहीं कर सकते परन्तु मेरे पिताजी की आज्ञा कठिन है।

जब दशमी आई तब राज्य में ढिंढोरा पिटा। उसको सुनकर सोभन अपनी पत्नी के समीप गया और उस से पूछा कि हे प्रिय! तुम मुझे कुछ उपाय बतलाओ क्योंकि यदि मैं व्रत करूँगा तो अवश्य ही मर जाऊँगा। इस पर चन्द्रभागा बोली-हे प्राणनाथ! मेरे पिता के राज्य में एकादशी के दिन कोई भी

भोजन नहीं करता है। यहां तक कि हाथी, घोड़ा, ऊँट आदि भी तृण, अन्न, जल आदि ग्रहण नहीं करते। फिर यहां मनुष्य कैसे भोजन कर सकते हैं। यदि आप भोजन करना चाहते हैं तो यहां से दूसरे स्थान को चले जाइये। क्योंकि यदि आप इसी स्थान पर रहोगे तो आपको व्रत अवश्य ही करना पड़ेगा। इस पर सोभन बोला कि-हे प्रिय! आप का कहना बिल्कुल उत्तम है। मैं अवश्य ही करूँगा, भाग्य में जो लिखा है वही होवेगा।

ऐसा विचार करके उसने एकादशी का व्रत किया और अब सूर्य भगवान भी अस्त हो गये और जागरण के लिये रात्रि हुई। वह सोभन को दुःख देने वाली थी। दूसरे दिन प्रातः से पहले शोभन इस संसार से चल बसा। राजा ने उसके मृतक शरीर को दहन करा दिया। चन्द्रभागा अपने पति की आज्ञानुसार अग्नि में दहन न हुई परन्तु पिता के घर रहना उत्तम समझा।

रमा एकादशी के व्रत के प्रभाव से उसे मन्दराचल पर्वत पर धन धान्य से युक्त तथा शत्रुओं से रहित एक उत्तम नगर प्राप्त हुआ।

एक समय मुचुकुन्द नगर में रहने वाला एक सोम शर्मा नाम का ब्राह्मण तीर्थ यात्रा के लिये निकला। उसने घूमते-घूमते उसको देखा। उस ब्राह्मण ने उस को अपने राजा का जमाई जानकर उसके निकट गया। राजा शोभन ब्राह्मण को देख कर आसन से उठ खड़ा हुआ। अपने श्वसुर तथा स्त्री चन्द्रभागा की कुशलता को पूछने लगा। सोम शर्मा ब्राह्मण बोला कि हे राजन्! हमारे राजा कुशल हैं तथा आपकी पत्नी चन्द्रभागा भी कुशल हैं। अब आप अपना वृतान्त बतलाइये। मुझे यह बड़ा आश्चर्य है कि ऐसा विचित्र और सुन्दर नगर आपको किस प्रकार प्राप्त हुआ। शोभन बोला कि-हे ब्राह्मण! यह सब कार्तिक मास की कृष्णपक्ष की रमा एकादशी के व्रत के प्रभाव से है। इसी से मुझे यह अनुपम

नगर प्राप्त हुआ है परन्तु यह अध्रुव है। इस पर ब्राह्मण बोला कि हे राजन्! यह अध्रुव क्यों है और ध्रुव, किस प्रकार हो सकता है सो आप मुझे समझाइये। मैं आपके कहे अनुसार ही करूँगा। आप इसमें किंचित मात्र भी झूठ न समझो। शोभन बोला कि हे ब्राह्मण! मैंने श्रद्धा पूर्वक व्रत किया था उसके प्रभाव से मुझे यह नगर प्राप्त हुआ है। इस वृतान्त को राजा मुचुकुन्द की पुत्री चन्द्रभागा से कहोगे तो वह इसको ध्रुव बना सकती है।

ब्राह्मण ने वहां आकर चन्द्रभागा से समस्त वृतान्त कहा। इस पर राजकन्या चन्द्रभागा बोली कि हे ब्राह्मण! आप मुझे उस नगर में ले चलिये, मैं अपने पति को देखना चाहती हूं। मैं अपने व्रत के प्रभाव से उस नगर को ध्रुव बना लूँगी।

चन्द्रभागा के वचनों को सुनकर वह सोमशर्मा ब्राह्मण उसको मदराचल पर्वत के पास वामदेव के आश्रम को ले गया। वामदेव ने उसकी कथा को

सुनकर चन्द्रभागा का मंत्रों से अभिषेक किया। चन्द्रभागा मन्त्रों तथा व्रत के प्रभाव से दिव्य देह धारण करके पति के पास चली गई। सोभन ने अपनी स्त्री चन्द्रभागा को देखकर प्रसन्नता पूर्वक अपने वाम अंग में बैठाया। चन्द्रभागा बोली–हे प्राणनाथ! अब आप मेरे पुण्य को सुनिये। जब मैं अपने पिता के गृह में आठ साल की थी तब ही से मैं यथाविधि एकादशी का व्रत करने लगी हूं। उन्हीं व्रतों के प्रभाव से आपका यह नगर ध्रुव हो जायेगा और समस्त कर्मों से युक्त होकर प्रलय के अन्त तक रहेगा। चन्द्रभागा दिव्य रूप धारण करके तथा दिव्य आभूषण तथा वस्त्रों से सजकर अपने पति के साथ आनन्द पूर्वक रहने लगी और शोभन भी उस के साथ आनन्द पूर्वक रहने लगा।

हे राजन! यह मैंने रमा एकादशी का माहात्म्य कहा है जो मनुष्य इस रमा एकादशी के व्रत को करते हैं उनके समस्त ब्रह्म हत्या आदि के पाप नष्ट

हो जाते हैं। जो मनुष्य रमा एकादशी का माहात्म्य सुनते हैं वह अन्त में विष्णुलोक को जाते हैं।

॥ अथ प्रबोधिनी देवोत्थान एकादशी माहात्म्य ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे मुनिश्रेष्ठ! अब आप पापों को नष्ट करने वाली तथा पुण्य और मुक्ति को देने वाली प्रबोधिनी एकादशी का माहात्म्य सुनिये। भागीरथी गंगा तथा तीर्थ, नदी, समुद्र आदि तभी तक फल देते हैं जब तक प्रबोधिनी एकादशी नहीं आती कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की प्रबोधिनी एकादशी के व्रत का फल एक सहस्त्र अश्वमेघ तथा सौ राजसूय यज्ञ के फल के बराबर होता है।

नारदजी ने पूछा कि-हे पिताजी! यह संध्या को भोजन करने से, रात्रि में भोजन करने तथा पूरे दिन उपवास करने से क्या 2 फल मिलता है? उसे आप समझाइये। ब्रह्माजी बोले कि-हे नारद! एक संध्या को भोजन करने से एक जन्म का, रात्रि में भोजन

करने से दो जन्म का तथा पूरे दिन उपवास करने से सात जन्म के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। प्रबोधिनी एकादशी के व्रत के प्रभाव से सुमेरू पर्वत के समान कठिन पाप क्षण मात्र में ही नष्ट हो जाते हैं। अनेकों पूर्व जन्म के किये हुए बुरे कर्मों को यह प्रबोधिनी एकादशी का व्रत क्षण भर में नष्ट कर देता है। जो मनुष्य अपने स्वभावानुसार इस प्रबोधिनी एकादशी का विधिपूर्वक व्रत करते हैं उन्हें पूर्ण फल प्राप्त होता है।

हे मुनिश्वर! जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक थोड़ा भी पुण्य करते हैं, उनका वह पुण्य पर्वत के समान अटल हो जाता है। जो मनुष्य हृदय के अन्दर ही ऐसा ध्यान करते हैं कि प्रबोधिनी एकादशी का व्रत करूँगा उनके सौ जन्म के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य प्रबोधिनी एकादशी के दिन रात्रि को जागरण करते हैं उनकी बीती हुई तथा आने वाली दस हजार पीढ़ियाँ विष्णुलोक में जाकर वास करती

हैं और नरक में अनेक दुःखों को भोगते हुए पितृ विष्णुलोक में जाकर सुख भोगते हैं। ब्रह्महत्या आदि महान पाप भी प्रबोधिनी एकादशी का व्रत करने सेधुल जाते हैं एकादशी के दिन रात्रि को जागरण करने का फल अश्वमेघ आदि के यज्ञों के फल से अधिक होता है। समस्त तीर्थों में जाने तथा गौ, स्वर्ण, भूमि आदि के दान का फल कार्तिक मास की शुक्लपक्ष की प्रबोधिनी एकादशी के रात्रि के जागरण के फल के बराबर होता है।

इस संसार में जितने भी तीर्थ हैं तथा जितने भी तीर्थों की आशा की जा सकती है वह सब प्रबोधिनी एकादशी का व्रत करने वाले के घर में रहते हैं। जो मनुष्य इस एकादशी के व्रत को करता है वह योगीवान योगी, तपस्वी तथा इन्द्रियों को जीतने वाला होता है। क्योंकि वह एकादशी भगवान विष्णुको अत्यन्त प्रिय है। इसके व्रत के प्रभाव से कामिका, वाचिका और मानसिक पाप नष्ट हो जाते

हैं। इस एकादशी के दिन जो भगवान की प्राप्ति के लिये दान, तप, होम, यज्ञ आदि करते हैं उन्हें अक्षय पुण्य मिलता है।

प्रबोधिनी एकादशी के दिन भगवान की पूजा करने से बाल, यौवन और वृद्धावस्था के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। इस एकादशी की रात्रि को जागरण करने का फल चन्द्र सूर्य ग्रहण के समय स्नान करने के फल से सहस्त्र गुना अधिक होता है। मनुष्य जन्म से लेकर जो पुण्य करता है वह पुण्य प्रबोधिनी एकादशी के व्रत के पुण्य के सामने व्यर्थ है। इसलिये हे नारद! तुमको भी विधि पूर्वक विष्णु भगवान की पूजा करनी चाहिये जो मनुष्य कार्तिक मास में धर्म परायण होकर अन्य व्यक्तियों का अन्न नहीं खाते उन्हें चन्द्रायण व्रत का फल मिलता है। कार्तिक मास में भगवान दान आदि से उतने प्रसन्न नहीं होते जितने कि शास्त्रों की कथा सुनने से प्रसन्न होते हैं। कार्तिक मास में जो मनुष्य भगवान की

कथा को थोड़ा बहुत पढ़ते या सुनते हैं उन्हें सौ गौ के दान का फल मिलता है। मनुष्य अपने कल्याण के लिये विष्णु भगवान की कथा सुनते हैं वे अपने कुटुम्ब का उद्धार करके एक सहस्त्र गौ दान का फल पाते हैं। जो मनुष्य प्रबोधिनी एकादशी के दिन विष्णु की कथा सुनते हैं। उन्हें सातों दीप के दान का फल मिलता है। जो विष्णु की भक्तिपूर्वक कथा सुनते हैं और कथा बांचने वाले ब्राह्मण की यथाचित्त पूजा करते हैं तथा उसे सन्तुष्ट करते हैं वे उत्तम लोक को जाते हैं।

इस पर नारदजी बोले-हे ब्रह्माजी! अब आप एकादशी के व्रत का विधान कहिये और कैसा व्रत करने से से कौन-सा पुण्य मिलता है? वह भी समझाइये। ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी! इस एकादशी के दिन मनुष्य को ब्रह्म मुहूर्त में उठना चाहिये और नदी, तालाब, कुंआ आदि पर स्नान करके व्रत का नियम ग्रहण करना चाहिये। उस

समय भगवान से विनय करनी चाहिये कि हे भगवान! आज मैं निराहार रहूँगा और दूसरे दिन भोजन करूँगा। इसलिये आमेरे रक्षा करें। इस प्रकार विनय करके भगवान की पूजा करनी चाहिये। उस रात्रि को भगवान के समीप गीत, नृत्य, बाजे, तथा कथा आदि से व्यतीत करनी चाहिये। प्रबोधिनी एकादशी के दिन कृपणता को त्यागकर बहुत से पुष्प, फल, अगर, धूप, आदि से भगवान की आराधना करनी चाहिये। शंख के जल से भगवान को अर्घ देना चाहिये। इसका समस्त तीर्थदान आदि से करोड़ गुना फल अधिक होता है। जो मनुष्य पुष्प से भगवान की पूजा करते हैं उनके सामने इन्द्र भी हाथ जोड़ता है। कार्तिक मास में जो विल्व पत्र से भगवान की पूजा करते हैं उन्हें अन्त में मुक्ति मिलती है।

कार्तिक मास में जो मनुष्य तुलसीजी से भगवान की पूजा करता है उसके दस हजार जन्म के समस्त

पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य इस मास में श्री तुलसी जी के दर्शन करते हैं या छूते हैं या ध्यान करते हैं या रोपण अथवा सेवा करते हैं वे हजार कोटि युग तक भगवान के घर में रहते हैं। समस्त मनोकामनाओं को पूरा करने वाले भगवान कदम्ब पुष्प को देखकर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं यदि उनकी कदम्ब पुष्प से पूजा की जाय तो यमराज के दुःखों को नहीं पाते। जो गुलाब के पुष्प से भगवान की पूजा करते हैं उन्हें मुक्ति मिलती है। जो मनुष्य बकुल और अशोक के फूलों से भगवान की पूजा करते हैं वे अत्यन्त काल तक शोक से रहित होते हैं। जो मनुष्य विष्णु भगवान की सफेद और लाल कनेर के फूलों से पूजा करते हैं उन पर भगवान अत्यन्त प्रसन्न होते हैं।

जो मनुष्य विष्णु भगवान की दुर्वादल से पूजा करते हैं, वे पूजा के फल से सौ गुना फल अधिक पाते हैं। जो भगवान की समी पत्र से पूजा करते हैं वे

भयानक यमराज के मार्ग को सरलता से पार कर जाते हैं। जो मनुष्य चम्पक पुष्प से भगवान विष्णु की पूजा करते हैं वे आवागमन के चक्र से छूट जाते हैं। जो मनुष्य स्वर्ण का बना हुआ केतकी पुष्प भगवान पर चढ़ाते हैं उनके करोड़ों जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य भगवान के पीले और रक्त वर्ण कमल के सुगन्धित फूलों से पूजा करते हैं उन्हें श्वेत द्वीप में स्थान मिलता है।

इस प्रकार रात्रि में भगवान की पूजा करके प्रातः काल शुद्ध जल की नदी में स्नान करना चाहिए। स्नान करने के पश्चात भगवान की पूजा करनी चाहिए। इसके बाद पूर्ति के लिये ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये और दक्षिणा देकर मीठे वाक्यों द्वारा सभा करनी चाहिये। इसके उपरान्त भोजन गौ और दक्षिणा से गुरु की पूजा करनी चाहिए और ब्राह्मणों को बहुत सी दक्षिणा देकर नियम को छोड़ना चाहिए। ब्राह्मणों को यथा शक्ति दक्षिणा

देनी चाहिये। जिस ब्राह्मण को रात्रि में भोजन करावे उसे स्वर्ण सहित बैल दान करना चाहिए। जो मनुष्य यात्रा स्नान करते हैं उन्हें दही और शहद दान करना चाहिये। जो मनुष्य फल की आशा करते हैं उन्हें फल का दान करना चाहिये। तेल की जगह घी और घी की जगह दूध और अन्नों में चावल दान करना चाहिये। जो मनुष्य इस व्रत में भूमि शयन करते हैं उन्हें सब वस्तुओं सहित शैयादान करनी चाहिये। जो मौन धारण करते हैं उन्हें स्वर्ण सहित तिलदान करना चाहिये। जो मनुष्य बालों को धारण करते हैं उन्हें दर्पण दान करना चाहिये। जो मनुष्य कार्तिक मास में उपानह धारण नहीं करते उन्हें उपानह दान करना चाहिये। जो इस मास में नमक त्यागते हैं उन्हें शक्कर दान करनी चाहिए। जो मनुष्य नित्यप्रति देव मन्दिरों में दीप जलाते हैं उन्हें स्वर्ण या ताँबे के दीये को घी तथा बत्ती सहित दान करना चाहिये। जो मनुष्य चातुर्मास्य व्रत में किसी वस्तु को त्याग

देते हैं उन्हें उस दिन से पुनःग्रहण करना चाहिये। जो मनुष्य प्रबोधिनी एकादशी के दिन विधिपूर्वक व्रत करते हैं उन्हें अत्यन्त सुख मिलता है और अन्त में स्वर्ग को जाते हैं।

जो मनुष्य चातुर्मास्य व्रत को बिना किसी विघ्न के पूरा कर देते हैं उन्हें फिर दुबारा जन्म नहीं मिलता। जिन मनुष्यों का व्रत खंडित हो जाता है वह नरक को जाते हैं। जो मनुष्य इस एकादशी के माहात्म्य को सुनता व पढ़ता है उसे अनेक गौ दान का फल मिलता है।

॥ अथ पद्मिनी एकादशी माहात्म्य ॥

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे भगवान! अब आप अधिक (लौंद) मास शुक्लपक्ष की एकादशी के बारे में बतलाइये। उस एकादशी का क्या नाम है तथा उसके व्रत की विधि क्या है सो समझाकर कहिये।

श्रीकृष्ण बोले कि हे राजन अधिक (लौंद) मास की एकादशी का नाम पद्मिनी है। इस एकादशी के व्रत से मनुष्य विष्णु लोक को जाता है। हे राजन! इस विधि को मैंने सबसे प्रथम नारदजी से कहा था। यह विधि अनेक पापों को नष्ट करने वाली तथा मुक्ति और भक्ति प्रदान करने वाली है। आप ध्यान पूर्वक श्रवण कीजिए।

दशमी के दिन व्रत को शुरू करना चाहिये और कांसे के पात्र में भोजन, मांस, मसूर, चना, कोदों, शहद, शाक और पराया अन्न दशमी के दिन नहीं खाना चाहिए। इस दिन हविष्य भोजन करना चाहिए और नमक भी नहीं खाना चाहिये। उस रात्रि को भूमि पर शयन करना चाहिये और ब्रह्मचर्य पूर्वक रहना चाहिए। एकादशी के दिन प्रातः उठकर नित्य क्रिया से निवृत होकर दाँतुन करनी चाहिये और बारह कुल्ला करके पुण्य क्षेत्र में स्नान करके चला जाना चाहिए। उस समय गौमय मृतिका, तिलकुश तथा आमल की चूर्ण से विधि पूर्वक स्नान करना

चाहिए। स्नान करने से प्रथम शरीर में मिट्टी लगाते हुए उसी से प्रार्थना करनी चाहिये। हे मृतिके! तुमको भगवान ने सत बाहु रूप धारण करके निकाला है ब्रह्माजी ने तुम्हें दिया है और कश्यप जी ने तुमको मन्त्र से पूजा है इसलिए तुम मुझे भगवान की पूजा करने के लिए शुद्ध बना दो। समस्त औषधियों से पैदा हुई, गौ के पेट में स्थित रहने वाली और पृथ्वी को पवित्र करने वाली तुम मुझे शुद्ध करो। ब्रह्मा के थूक से पैदा होने वाली रात्रि! तुम मेरे शरीर को छूकर मुझे पवित्र करो। हे शंख, चक्र, गदाधारी देवों के देव! जगन्नाथ आप मुझे स्नान के लिए आज्ञा दीजिये। इसके उपरान्त वरुण मात्र को जप कर स्नान करना चाहिये। पवित्र तीर्थों के अभाव में उनका स्मरण करते हुए किसी तालाब में स्नान करना चाहिये।

स्नान करने के पश्चात सफेद फटे वस्त्रों को धारण करके तथा संध्या तर्पण करके मन्दिर में जा कर भगवान की पूजा करनी चाहिए। स्वर्ण की

राधा सहित भगवान की प्रतिमा या पार्वती सहित महादेव की प्रतिमा बनाकर पूजन करे। धान्य के ऊपर मिट्टी या तांबे का घड़ा रखना चाहिये। उस घड़े को वस्त्र तथा गन्ध आदि से सुशोभित करके उसके मुँह पर ताँबे, रुपया, सोने का पात्र रखना चाहिए। उस पात्र पर भगवान की प्रतिमा को रखकर, धूप दीप नैवेद्य पुष्प चन्दन आदि से उनकी पूजा करनी चाहिए। उसके उपरान्त भगवान के सम्मुख नृत्य गान आदि। करे उस दिन पतित तथा रजस्वला स्त्री का स्पर्श नहीं करना चाहिए। उस दिन असत्य भाषण तथा गुरु और ब्राह्मण की निंदा नहीं करनी चाहिए। उस दिन भक्तजनों के साथ भगवान के सामने पुराण की कथा सुननी चाहिए। अधिक (लौंद) मास की शुक्लपक्ष की पद्मिनी एकादशी का व्रत निर्जला करना चाहिए। यदि मनुष्य शक्तिवान हो तो उसे जल पान या क्षुधाहार से व्रत करना चाहिए। रात्रि में जागरण करके नाच और

गान कर के भगवान का ध्यान करते रहना चाहिए। प्रति पहर मनुष्य को भगवान या महादेवजी की पूजा करनी चाहिए। भगवान को पहले प्रहर में नारियल दूसरे में विल्व फल, तीसरे में सीताफल और चौथे में सुपारी, नारंगी अर्पण करना चाहिए। इससे पहले प्रहर में अग्नि होम का, दूसरे में बाजपेय यज्ञ का तीसरे में अश्वमेघ यज्ञ का और चौथे में राजसूय यज्ञ का फल मिलता है। इस फल से अधिक संसार में न यज्ञ है, न विद्या है, न तप है, न दान आदि है। एकादशी का व्रत करने वाले मनुष्य को समस्त तीर्थ और यज्ञों का फल मिल जाता है। इस तरह से सूर्योदय तक जागरण करना चाहिए। और स्नान करके ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये। सब पदार्थ भगवान की प्रतिमा सहित ब्राह्मण को देना चाहिये इस प्रकार जो मनुष्य विधि पूर्वक भगवान की पूज तथा व्रत करते हैं उनका जन्म सफल हो जाता है और इस लोक में अनेक सुखों को भोगकर अन्त मे

विष्णु लोक को जाते हैं। हे राजन! मैंने आपको एकादशी के व्रत का पूरा विधान बतला दिया अब जो पद्मिनी एकादशी का भक्तिपूर्वक व्रत करते हैं उनकी कथा कहता हूं ध्यान पूर्वक श्रवण कीजिये। एक सुन्दर कथा पुलस्त्यजी ने नारदजी से कही थी।

एक समय कार्तवीर्य ने रावण को कारागार में बन्द कर रखा था। उसको पुलस्त्यजी ने कार्तवीर्य की विनय करके छुड़ाया। इस घटना को सुनकर नारद जी ने पुलस्त्य जी से पूछा कि हे महाराज! उस महावीर रावण जिसने समस्त देवताओं सहित देवराज इन्द्र को जीत लिया था उसको कार्तवीर्य ने किस प्रकार जीता सो आप मुझे समझाइये। इस पर पुलस्त्य जी बोले कि-हे नारद! आप-पहले कार्तवीर्य की उत्पत्ति सुनो।

त्रेतायुग में महिष्मती नाम की नगरी में उपकीर्तवीर्य राजा राज्य करता था। उस राजा के सौ स्त्रियाँ थीं उसमें से किसी के भी राज्य भार लेने

वाला योग्य पुत्र नहीं था। उस राजा ने पुत्र की प्राप्ति के लिये यज्ञ किये, परन्तु सब असफल रहे। अन्त में वह तप के द्वारा ही सिद्धियों को प्राप्त जान कर तपस्या करने के लिये वन को चला गया। उस की स्त्री हरिश्चन्द्र की पुत्री प्रमदा वस्त्राभूषणों को त्यागकर अपने पति के साथ गंध मादन पर्वत पर चली गई। उस स्थान पर इन लोगों ने दस सहस्त्र वर्ष तक तपस्या की परन्तु सिद्धि प्राप्त न हो सकी। राजा के शरीर में केवल हड्डियाँ रह गईं। यह देखकर प्रमदा ने विनय सहित महासती अनुसुइया से पूछा कि मेरे पतिदेव को तपस्या करते हुए दस सहस्त्र वर्ष बीत गये परन्तु अभी तक भगवान प्रसन्न नहीं हुए हैं जिससे मुझे पुत्र प्राप्त हो सके। अब आप मुझे कोई व्रत बतलाइये जिससे मुझे पुत्र की प्राप्ति हो।

इस पर अनुसुइयाजी बोलीं कि अधिक (लौंद) मास जो कि बत्तीस महीने बाद आता है उनमें दो एकादशी होती हैं जिसमें शुक्ल पक्ष की एकादशी

का नाम पद्मिनी और कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम परमा है। उसके जागरण और व्रत करने से भगवान तुम्हें अवश्य ही पुत्र देंगे। इसके पश्चात अनुसुइया जी ने व्रत की विधि बतलाई। रानी ने अनुसुइया की बतलाई हुई विधि के अनुसार एकादशी का व्रत और रात्रि में जागरण किया। इससे भगवान विष्णु उस पर अत्यन्त प्रसन्न हुए और वरदान मांगने के लिये कहा। रानी इस पर भगवान की स्तुति करने लगी। रानी ने कहा कि आप यह वरदान मेरे पति को दीजिये। प्रमदा का वचन सुनकर भगवान विष्णु बोले कि प्रमदे! मलमास मुझे बहुत प्रिय है। जिसमें एकादशी का व्रत तथा रात्रि जागरण तुमने विधि पूर्वक किया। इसलिये मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूं इतना कहकर भगवान विष्णु राजा से बोले कि हे राजेन्द्र! तुम अपनी इच्छा के अनुसार वर मांगो। क्योंकि तुम्हारी स्त्री ने मुझको प्रसन्न किया है।

भगवान की सुन्दर वाणी को सुनकर राजा बोला कि हे भगवान! आप मुझे सबसे श्रेष्ठ सबके द्वारा

पूजित तथा आपके अतिरिक्त देव, दानव, मनुष्य आदि से अजेय उत्तम पुत्र दीजिए। भगवान उससे तथास्तु कहकर अंतर्ध्यान हो गए। वह दोनों अपने राज्य को वापिस आये। उन्हीं के वह कार्तवीर्य उत्पन्न हुये थे। वह भगवान के अतिरिक्त सबसे अजेय थे! इसी से उन्होंने रावण को जीत लिया था। यह सब पद्मिनी के व्रत का प्रभाव था। नारद जी से इतना कहकर पुलस्त्य जी वहां से चले गये।

भगवान बोले कि-हे महाराज यह मैंने अधिक (लौंद) मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी का व्रत कहा है। जो मनुष्य इस व्रत को करता है वह विष्णु लोक को जाता है।

॥ अथ परमा एकादशी माहात्म्य ॥

श्री युधिष्ठिर बोले कि-हे जनार्दन! अब आप अधिक (लौंद) माह की कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम तथा उसके व्रत की विधि बतलाइये।

श्रीकृष्ण बोले कि हे राजन इस एकादशी का नाम परमा है। इसके व्रत से समस्त पाप नष्ट होकर इस लोक में तथा परलोक में मुक्ति मिलती है इसका व्रत पूर्वोक्त विधि से करना चाहिये और भगवान नरोत्तम की धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प आदि से पूजा करनी चाहिये। इस एकादशी के विषय की एक मनोहर कथा जो कि महर्षियों के साथ काम्पिल्य नगरी में हुई थी कहता हूँ। आप ध्यान पूर्वक श्रवण कीजिए।

काम्पिल्य नगर में सुमेधा नाम का एक ब्राह्मण रहता था। इसकी स्त्री पवित्रा अत्यन्त पवित्र तथा पतिव्रता थी। वह किसी पूर्वजन्म के कारण अत्यंत दरिद्र थी। उसे भिक्षा मांगने पर भी भिक्षा नहीं मिलती थी। वह सदैव वस्त्रों से रहित होते हुए भी अपने पति की सेवा करती रहती। वह अतिथि को अन्न देकर स्वयं भूखी रहती थी और पति से कभी किसी वस्तु की नहीं कहती थी।

जब सुमेधा ने अपनी स्त्री को अत्यन्त दुर्बल देखा तो बोला कि-हे प्रिये! ज.ब मैं धनवानों से धन मांगता हूं तो वह कुछ मुझे नहीं देते। गृहस्थी केवल धन से चलती है अब मैं क्या करूँ। इसलिए यदि तुम्हारी राय हो तो मैं परदेश मे जाकर उद्यम करूँ। इस पर उसकी स्त्री विनीत भाव से बोली कि-पति देव! पति अच्छा या बुरा जो कुछ भी कहे पत्नी को वही करना चाहिए। पूर्वजन्म में जो मनुष्य विद्या और भूमि दान करते हैं उन्हें ही इस जन्म में विद्या और भूमि मिलती है। यदि कोई मनुष्य दान नहीं करता तो भगवान उसे केवल अन्न ही देते हैं। मैं आपका वियोग नहीं सह सकती। पति रहित स्त्री की संसार में माता, पिता, भ्राता, श्वसुर तथा सम्बन्धी आदि निंदा करते हैं। इसलिए आपको इसी स्थान पर रहना चाहिए।

एक समय कौण्डिन्य मुनि उस जगह आये। उनको आते देखकर सुमेधा सहित स्त्री ने प्रणाम

किया और बोले हम आज धन्य हैं। आज हमारा जीवन आपके दर्शन से सफल हुआ। उन्होंने उनको आसन तथा भोजन दिया। भोजन देने के पश्चात पवित्रा बोली कि हे मुनि! आप मुझे दरिद्रता का नाश करने का उपाय बतलाइये। मैंने अपने पति को परदेश में धन कमाने से जाने से रोका है। मेरे भाग्य से आप आ गए हैं। मुझे पूर्ण निश्चय है कि अब मेरी दरिद्रता शीघ्र ही नष्ट हो जायेगी। अतः आप हमारी दरिद्रता नष्ट करने के लिए किसी व्रत को बतलाइये। इस पर कौण्डिन्य मुनि बोले कि मल मास की कृष्णपक्ष की परमा एकादशी के व्रत से समस्त पाप, दुःख और दरिद्रता आदि नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य इसका व्रत करता है वह धनवान हो जाता है।

इस व्रत में नाच, गाना आदि सहित रात्रि जागरण करना चाहिए। कुबेर को महादेव जी ने इसी व्रत के करने से धनाधिपति बना दिया। इसी व्रत के प्रभाव

से सत्यवादी हरिश्चन्द्र को पुत्र, स्त्री और राज्य प्राप्त हुआ था। उस मुनि ने उसको एकादशी के व्रत की समस्त विधि कह सुनाई।

वह मुनि फिर बोले कि ब्राह्मणजी! पंचरात्रि व्रत इससे भी अधिक उत्तम है। परमा एकादशी के दिन प्रातः काल नित्यकर्म से निवृत्त होकर विधिपूर्वक पंचरात्रि व्रत आरम्भ करना चाहिए। जो मनुष्य पाँच दिन तक निर्जल व्रत करते हैं वे अपने माता-पिता और स्त्री सहित स्वर्गलोक को जाते हैं। जो पांच दिन तक संध्या को भोजन कराते हैं। वे स्वर्ग को जाते हैं। जो मनुष्य स्नान करके पांच दिन तक ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं उन्हें समस्त संसार के भोजन कराने का फल मिलता है। इस व्रत में जो घोड़े का दान करते हैं उन्हें तीनों लोक दान करने का फल मिलता है। जो मनुष्य उत्तम ब्राह्मण को तिल सहित दान करते हैं वे तिल की संख्या के बराबर विष्णु लोक में जाते हैं। जो पांच दिन तक

ब्रह्मचर्य पूर्वक रहते हैं वे देवांगनाओं के साथ स्वर्ग में भोग करते हैं। हे पवित्रे! तुम अपने पति के साथ इसी व्रत को करो। उससे तुम्हें सिद्धि प्राप्त होगी और अन्त में स्वर्ग को जाओगी। कोण्डिन्य मुनि के कहे अनुसार उन्होंने परमा एकादशी का पांच दिन तक व्रत किया। व्रत समाप्त होने पर उसने देखा कि राजकुमार उसके सामने खड़े हैं। राजकुमार ने एक उत्तम ग्रह जो कि सब वस्तुओं से सजा हुआ था रहने के लिए दिया। राजकुमार उसको एक ग्राम देकर अपने महल को चले गए। दोनों इस व्रत के प्रभाव से इस लोक में अनन्त सुख भोग कर अन्त में स्वर्गलोक को गए।

श्रीकृष्ण बोले कि हे राजन! जो मनुष्य परमा एकादशी का व्रत करता है उसे समस्त तीर्थों, दानों आदि का फल मिलता है। जिस प्रकार संसार में दो पैरों वालों में ब्राह्मण, चार पैरों वालों में गौ, देवताओं में इन्द्रराज श्रेष्ठ हैं उसी प्रकार महीनो में अधिक

(लौंद) का मास उत्तम है। इस महीने में पंच रात्रि अत्यन्त पुण्य देने वाली है। इस महीने में पद्मिनी और परमा एकादशी भी श्रेष्ठ हैं। उनके व्रत से समस्त पाप क्षीण हो जाते हैं। दुर्बल मनुष्य को एक व्रत जरूर करना चाहिये। जो मनुष्य अधिक मास स्नान तथा एकादशी व्रत नहीं करते उन्हें आत्म घात का पाप लगता है। यह मनुष्य योनि बड़े पुण्यों से मिलती है। इसलिये मनुष्य को एकादशी का व्रत अवश्य करना चाहिए।

हे युधिष्ठिर! जो आपने मुझसे पूछा था सो मैंने आपको बतला दिया। अब आप इसका व्रत भक्तिपूर्वक कीजिये। जो मनुष्य अधिक मास (लौंद) की परमा एकादशी का व्रत करते हैं वे स्वर्ग लोक में जाकर इन्द्र के समान सुखों कोभोगते हुए तीनों लोकों में वन्दनीय होते हैं।

इति एकादशी व्रत माहात्म्य कथा समाप्तम्

ईश्वर प्रार्थना

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे॥ ॐ॥
जो ध्यावे फल पावे दुख विनशे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का॥ ॐ॥
मात-पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा आस करूँ किसकी॥ ॐ॥
तुम हो पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी।
परब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी॥ ॐ॥
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्ता।
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्ता॥ ॐ॥
तुम हो एक अगोचर सबके प्राण पति।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमती॥ ॐ॥
दीन बन्धु दुख हर्ता तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ शरण पड़ा तेरे॥ ॐ॥
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तों की सेवा॥ ॐ॥

आरती श्री बद्रीनारायण जी की

श्रीपवन मन्द सुगन्ध शीतल

हेम मन्दिर शोभितम्॥

निकट गंगा बहत निर्मल

श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥

शेष सुमिरन करत निशिदिन

धरत ध्यान महेश्वरम्॥

श्री वेद ब्रह्मा करत स्तुति

श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥

शक्ति गौरि गणेश शारद

नारद मुनि उच्चारणम्॥

जोग ध्यान अपार लीला

श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥

इन्द्र चन्द्र कुबेर दिनकर करें

धूप दीप प्रकाशितम्॥

सिद्ध मुनिजन करत जय जय

श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥

यक्ष किन्नर करत कौतुक

ज्ञान गन्धर्व प्रकाशितम् ॥

श्री लक्ष्मी कमला चँवर ढोरें

श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥

कैलाश में एक देव निरंजन

शलै शिखर महेश्वरम् ॥

श्री राजा युधिष्ठिर करत स्तुति

श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्

श्री बद्रीनाथ के पंचरत्न

पढ़त पाप विनाशनम् ॥

कोटि तीर्थ भवेत पुण्यं

प्राप्यते फल दायकम् ॥

आरती श्री तुलसी जी की

तुलसी महारानी नमो नमो।

हरि की पटरानी नमो नमो।

बन तुलसी पूरन तप कीयो मैया,

शालगराम महा पटरानी।

जाके मंजमंजरी कोमल मैया,

श्रीपति चरण कमल लपटानी।

धूप, दीप, नैवेद्य आरती मैया,

पुष्पन की बरषा बरसानी।

छप्पन भोग छत्तीसों व्यंजन मैया,

बिन तुलसी हरि एक न मानी।

सामरो सखी माई तेरा यश गावै मैया,

भक्तीवर दीजै महारानी।

सायँकाल की आरती

जय जय श्री जमुने मां जय जय श्री जमुने॥ टेक॥
श्री गौ लोक निवासिनि वासिन ब्रज रमने।
सूर्पसुता संज्ञा उर जन्मी, जय जय अवतरने॥ जय॥
उत्तर दिशि कर पावन-पावन तप करने।
पुनि कालिन्द मन मर्दन अर्दन स्वीकरने॥ जय॥
दहन देख तन गिरिवर आरत, स्तुति करने।
तिन्ह अपराध क्षमा कर रस मय श्रीपतने॥ जय॥
तज तन तरणि समर्पित जम्बू तरु गवने।
छिन्न भिन्न कर पावन दाहन अघ हरने॥ जय॥
ब्रज लीला सर रंजित माथुर कुल भरने।
श्री विश्रान्त विहरिणी तारण दुःख हरने। जय॥
श्री नव नीत प्रिया उर आनन्द चित्त करने।
रास रसिक मण्डित पण्डित भव तरने॥ जय॥
सायंकाल करे जो आरति मन बच क्रम करने।
है यमफन्द निवृत्ति वृत्ति प्रभु भरने॥ जय इति॥

आरती श्रीकृष्ण जी की

आरती युगल किशोर की कीजै।

राधा तन मन धन न्यौछावर कीजै॥ टेक॥

रवि शशि कोटि बदन की शोभा।

ताहि निरख मेरौ मन लोभा॥ आरती॥१

गौर श्याम मुख निरखत रीझे।

प्रभु को स्वरूप नयन भर पीजे॥ आरती॥२

कंचन थार कपूर की बाती।

हरि आये निर्मल भई छाती॥ आरती॥३

फूलन की सेज फूलन की माला।

रत्न सिंहासन बैठे नन्दलाला॥ आरती॥४

मोर मुकुट कर मुरली सोहे।

नटवर वेष देख मन मोहै॥ आरती॥५

ओढ्यो नील पीत पट सारी।

कुंज - बिहारी गिरवरधारी॥ आरती॥६

श्री पुरुषोत्तम गिरवर धारी।

आरती करत सकल ब्रजनारी॥ आरती॥७

नन्द नन्दन वृषभान किशोरी।

परमानन्द स्वामी अविचल जोड़ी॥ आरती॥८

आरती श्री गंगा जी की

जय जय श्री गंगा देवि जय महेश रानी॥ टेका॥

गौर वरण तन विशाल हंसानन कंठ माल सेवत सुर

लोक पाल, चतुर फल निदानी। जय-जय—

आवत आनन्द निदान दूजी को तुम समान, कवि-

जन गुण करत गान, श्वति पुराण वानी-जय जय०

रविकुल नृत्य धन्य हेत प्रकटी भव सिन्धु सेत—

विष्णु पदी दिवि निकेत विधि सुरेश मानी। जय०-

निर्मल वर बहत नीर भंजन भव अनित भीर—

हरि विलास वास तीर देउ कीन जानी। जय-जय०

आरती श्री यमुना जी की

ओ० जय यमुना माता, हरि ओ० जै यमुना माता।
जो न्हावे फल पावे सब सुख की दाता। ओ०
श्री यमुना जल शीतल जल अगम बहे धारा। मैया
जो जन शरण-शरण से कर दिया निस्तारा। ओ०
जो जन प्रातः ही उठकर स्नान करे। मइया नित्य०
यम के त्रास ना पावे जो नित्य ध्यान करे। ओ०
कलिकाल में महिमा तुम्हारी अटल रही। मैया
तुम्हारा बड़ा माहात्म्य चारों वेद कही। ओ०
आन तुम्हारे माता प्रभु अवतार लियो। माता प्रभु०
नित्य निर्मल जल पीकर कंस को मार दियो। ओ०
नमो मात भयहरणी शुभ मंगल करणी। मैया शुभ०
मन 'बेचैन' भया है तुम बिन वैतरणी॥ ओ०॥

॥ श्री कमलनेत्र स्तोत्र ॥

श्री कमलनेत्र कटि पीताम्बर,
अधर मुरली गिरधरम्।
मुकुट कुण्डल कर लकुटिया,
सांवरे राधेवरम्॥
कूल यमुना धेनु आगे सकल,
गोपियों के मनहरम्।
पीत वस्त्र गरुड़ वाहन चरण,
सुख नित सागरम्॥
करत केलि कलोल निशदिन,
कुब्जा भवन उजागरम्।
अचल अमर अडोल निश्चल,
पुरुषोत्तम अपरापरम्॥
दीनानाथ दयालु गिरधर,
कंस हिरनाकुश हरम्।
गले फूल माल विशाल लोचन,

अधिक सुन्दर केशवम्॥
वंशीधर वसुदेव छल्यो बलि,
छल्यो हरि वामनम्।
जल डूबते गज राख लीनो,
लंका छेद्यो रावणम्॥
सप्तदीप नवखण्ड चौदह,
भवन कीनो एक पलम्।
द्रोपदी की लाज राखी,
कहाँ लौ उपमाकरम्॥
दीनानाथ दयालु पूरण,
करुणामय करुणाकरम्।
कविदत्त दास विलास निशदिन,
नाम जपत नित नागरम्॥
प्रथम गुरुजी के चरण वन्दों,
यस्य ज्ञान प्रकाशितम्॥
विष्णु जुगादि ब्रह्म,
सेवते शिवशंकरम्

श्री कृष्ण केशव कृष्ण केशव,

कृष्ण यदुपति केशवम्॥
श्री राम रघुवर राम रघुवर,
राम रघुवर राघवम्।
श्री राम कृष्ण गोविद,
माधव वासुदेव श्री वावनम॥
मच्छ कच्छ वाराह नरसिंह,
पाही रघुपति पावनम्॥
मथुरा में केशवराय विराजे,
गोकुल बाल मुकन्द जी।
श्री वृन्दावन में मदनमोहन गोपीनाथ गोविन्द जी॥
धन्य मथुरा धन्य गोकुल जहां श्रीपति अवतरे।
धन्य यमुना का नीर निर्मल ग्वाल बाल सखावरे॥
नवनीत नागर करत निरंतर शिवविरंचि मनमोहितम्।
कालिन्दी तट में करतक्रीड़ा बाल अदभुतसुंदरम्॥
ग्वाल बाल सब सखा विराजे संगे राधे भामनी।
वंशीवट तटनिकट यमुना मुरली की टेर सुहावनी॥
भजे राधे रघुवंश उत्तम परम राजकुमार जी।

सीता के पति भगवत जानत जगत प्राणअधारजी॥
जनक राजा प्रण राखो धनुष बाण चढ़ावहीं।
सती सीता नाम जाके श्री ामचन्द्र वर पावहीं॥
धन्य मथुरा खेल गोकुल नन्द हरि नन्दनम्।
बाल लीला पतित पावन देवकी वासुदेवकम्॥
श्रीकृष्ण कलिमलहरण जाके जोभजे हरिचरण को।
भक्ति अपनी देहु माधव भवसागर के तारण को॥
जगन्नाथ जगदीश स्वामी श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम्।
द्वारका के नाथ श्रीपति केशवं प्रणदेभ्यम॥
श्रीकृष्ण अष्टपद पढ़त निशदिन विष्णुलोक सगच्छित।
श्रीगुरुरामानंद अवतारस्वामीकवि दत्तदाससमाप्तम्।

॥ उद्यापन विधि ॥

उद्यापन के दिन यजमान नित्यक्रिया से निवृत होकर शुभ्र या रेशमी वस्त्र धारण करे। अपनी पत्नी को उसी प्रकार पवित्र करके सपत्नीक शुद्ध मन होकर आसन पर बैठे। 'ॐ पवित्रेस्थोः' इस मन्त्र से यजमान पवित्री धारण करे, और भगवान का ध्यान करे। पुनः 'अपवित्रः पवित्रो वा' इस मंत्र से पवित्र

करे। यजमान के हाथ में अक्षत, पुष्प, सुपारी देकर ॐ आनोभद्रा-इत्यादि मन्त्र पढ़ना चाहिये। फिर यजमान को दक्षिण हाथ में द्रव्य, अक्षत, सुपारी, जल लेकर संकल्प करना चाहिए। संकल्प करके पृथ्वी, गौरी और गणेश का पूजन कलश स्थापन, आचार्य वरणादि करके संकल्पित सब क्रियाओं का सम्पादन करना चाहिए। ततः पूर्वनिर्मित सर्वतोभद्र पर ब्रह्मादि देवताओं का आवाह्न करना चाहिये। उसके ऊपर ताम्र का कलश स्थापित करना चाहिये। कलश में चावल भरा हो, उसके ऊपर चांदी का पात्र हो। अष्टदल कमल बनाकर प्रधान देवता का आवाह्न करना चाहिए।

'सहस्त्र शीर्षा पुरुषः इत्यादि मंत्रों से लक्ष्मी सहित विष्णु का आवाह्न करना चाहिए। अष्टदल के आठों पत्रों पर पूर्वादि क्रम से अग्नि, इन्द्र, प्रजा पति, विश्वदेवा, ब्रह्मा, वासुदेव, श्रीराम का नाम लेकर आवाह्न करना चाहिए, फिर चारों दिशाओं में क्रमशः रुक्मिणी, सत्यभाभा, जाम्बवती और कालिन्दी का आवाह्न करना चाहिये। चोरों कोणों

में आग्नेयादि क्रम से शंख, चक्र, गदा का आवाह्न करना चाहिए। कलश के आगे गरुड़ का आवाह्न होना चाहिए। ततः पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि लोकपालों का आवाह्न करके षोडशोपचार से पूजन करना चाहिए।

फिर भगवान के सर्वांग शरीर का पूजन और नमस्कार करना चाहिए। स्नान, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल से पञ्चोपकार पूजन करना चाहिए। पात्र में जलदार-नारियल, अक्षत, फूल, चन्दन और सोना रखकर घुटने के बल बैठकर इस श्लोक (नारायणं हृषीकेश लक्ष्मीकान्त दयानिधे। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं व्रत्तं सम्पूर्ण हेतवे) से अर्घ्य देना चाहिए। इस के पश्चात इस दिन का कृत्य समाप्त करके गाने-बजाने से रात्रि व्यतीत करे।

दूसरे दिन यजमान तथा आचार्य नित्य कृत्य करके पुनः आचार्य 'अपवित्रः पवित्रो वा', पवित्रेस्थो व आनो भद्रा, आदि मन्त्रों का पाठ करके हवन का संकल्प करे और आवाहित देवताओं का पंचोपचार

से पूजन करे।

ततः 'सहस्त्रशीर्षा पुरुषः' इत्यादि १६ मन्त्रों से प्रधान के लिए हवन करना चाहिए। आवश्यकतावश केवल घी या पायस घी या पायसान्नयुक्त घी का हवन करना चाहिए।

हवन के पश्चात तीन बार अग्नि की प्रदक्षिणा करे। फिर जानु के बल बैठकर पुरुषसूक्त का पाठ करना चाहिए। ततः शेष हव्य तथा आज्य का हवन करना चाहिए। ततः आचार्य शुल्व प्रहरण करके प्रायश्चित संकल्प करावे और हवन समाप्त करे। ब्राह्मण को तूर्ण पात्र का दान दे। आचार्य को दक्षिणा के साथ सवत्सा सालंकारा श्वेत गाय दे।

यजमान १२ ब्राह्मणों को केशवादि १२ देवताओं का स्वरूप मानकर उनका पूजन करे, २ कलश, दक्षिणा धन , मिठाई और वस्त्र से युक्त करके दे। ततः प्रधान पीठ पर कल्पित केशवादि

देवताओं का उत्थापन करके आचार्य को दान दे। ततः आचार्य वैदिक तथा तन्त्रोक्त जल छिड़के। अग्नि की पूजा करे। फिर प्रार्थना करे विसर्जन करे। ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा सहित ताम्बूल दे, स्वयं भी सपरिवार इष्ट मित्रों सहित भोजन करे।

इस प्रकार विधिपूर्वक योग्य आचार्य के निर्देशन में उद्यापन करने से एकादशी-व्रत की सिद्धि होती है।

श्री एकादशी व्रत उद्यापन सामग्री

रोली, मौली, धूपबत्ती, केसर, कपूर, सिन्दूर, चन्दन, होरसा, पेड़ा, बतासा, ऋतुफल, केला, पान सुपारी, रुई, पुष्पमाला, पुष्प, दूर्वा, कुशा, गंगाजल, तुलसी, अग्निहोत्र, भस्म, गोमूत्र, घृत, शहद, चीनी, दूध, यज्ञोपवीत, अबीर (गुलाल), अभ्रक, गुलाब

जल, धान का लावा, इत्र, शीशा, इलायची, जावित्री, जायफल, पञ्चमेवा, हलदी, पीली सरसों, मेंहदी की बुकनी, नारियल, गिरि का गोला, पंचपल्लव, वंदनवार, कच्चा सूत, मूँग की दाल, उछ़द काला, सूप, विल्व पत्र, भोज पत्र, पंचरत्न, सर्वौषधि सप्तमृत्तिका, सप्तधान्य, पंचरंग, नवग्रह, समिधा, चौकी, पीढ़ा, घण्टा, शंख, कंटिया, कलश, गंगा सागर, कटोरी कटोरा, चरुस्थाली, आज्यस्थाली, बाल्टी, कलछी, सँड़ासी, चिमटा, प्रधान प्रतिमा सुवर्ण की, प्रधान प्रतिमा चांदी की, चांदी की कटोरी, पंचपात्र, आचमनी, अर्घा, तष्टा, सुवर्णजिव्हा, सुवर्ण शलाका, सिंहासन, छत्र, चमर, तिल, चावल, यव, घृत, चीनी, पंचमेवा, भोजनपत्र, बालू, ईंट, हवनार्थ लकड़ी आम की गोयँठा, दियासलाई और यज्ञपात।

वरण सामग्री—धोती, दुपट्टा, अँगोछा,

यज्ञोपवीत, पंचपात्र, आचमनी, अर्घा, तष्टा, लोटा, गिलास, छाता, छड़ी, कुशासन, कंबलासन, कटोरी (मधुपर्कार्थ), गोमुखी, रुद्राक्षमाला, पुष्पमाला, खड़ाऊँ, अँगूठी, देवताओं को वस्त्रादि।

शय्या सामग्री—प्रतिमा विष्णु भगवान की, पलंग, तकिया, चादर, दरी, रजाई, पहनने के वस्त्र छाता, जूता, खड़ाऊँ, पुस्तक, आसन, शीश घंटी पानदान, छत्रदान, भोजन के बर्तन, चूल्हा, लालटेन,पंखा, अन्न, घृत, आभूषण।

॥ समाप्त ॥